RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30

प्रेरणा विचार

अक्टूबर-2023 (पृष्ठ-44) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

नारी वंदन का अभिनंदन

भारत की अंतरिक्ष में बड़ी छलांग

विश्व गगन पर भारत गान

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के
कला एवं मीडिया
विद्यार्थियों के लिए

विषय :

- आजादी का अमृत महोत्सव
- भारतीय लोकतंत्र
- जनजातीय समाज
- उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड की संस्कृति
- पर्यावरण
- ग्राम विकास
- स्वाधीनता आन्दोलन
- भविष्य का भारत
- सामाजिक सद्भाव
- धर्म एवं अध्यात्म
- महिला सशक्तीकरण

वर्ग : वृत्तचित्र - कथा फ़िल्में - डॉक्यु ड्रामा
अधिकतम समय : 20 मिनट

1,2 एवं 3 दिसम्बर 2023
स्थान : गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

नगद पुरस्कार मूल्य
₹ 200000/-

SCAN TO REGISTER

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://prernasamvad.in/registerforfilms | Prerna Media | Prernasmedia | @PrernaMedia

नोट - प्रविष्टियों को 05 जून से 30 अक्टूबर 2023 तक भेज सकते हैं।

www.prernasamvad.in 9891360088
email : prernachitrabharti2023@gmail.com

संपर्क सूत्र : अरुण अरोड़ा - +9811338858 | डॉ. यथार्थ मंजुल - +91 9621560373 | डॉ. राजीव रंजन - +91 9871650421 | कार्यालय - +91 9354133754

प्रेरणा विचार

वर्ष -1, अंक - 10

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

अध्यक्ष अणंज कुमार त्यागी की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

नारी वंदन की प्राचीन परम्परा 06

एक देश एक चुनाव 14

'इंडिया' की जगह भारत बोलें 18

भारत की अंतरिक्ष में बड़ी छलांग 26

संपादकीय.....04
महिलाओं के सहयोग के बिना देश की उन्नति संभव नहीं.....05
विश्व का एकमात्र व्यवस्थित सुगठित महिला संगठन.....10
महिला आरक्षण से समाज में परिवर्तन आएगा.....12
संसद का विशेष सत्र : उत्पादकता और उपलब्धि.....13
भारत से ही 'स्व' का आत्मबोध होगा.....16
विश्व गगन पर भारत गान 20
घट-घट के राम की लीला.....22
नदी संस्कृति और उत्सव उल्लास.....24
भस्मासुर पाल रहे ट्रूडो को भारत का करारा जवाब.....28
स्वातन्त्र्य योद्धा डॉ. हेडगेवार.....30
आत्मनिर्भरता : तरक्की की पहली सीढ़ी.....32
वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के उपाय.....34
संतुलित आहार ही है स्वस्थ जीवन का आधार.....35
संघ को समझना है तो.....37
ग्रेटर नोएडा शार्ट फिल्म फेस्टिवल की चित्रमय झलक.....38
विशेष समाचार.....39
क्या आप जानते हैं.....40
हर दिन पावन.....41

नए युग का सूत्रपात

भारत ने जी-20 आयोजन के माध्यम से भू-राजनैतिक विषयों पर एकमत तैयार करने के साथ ही दुनिया की लगभग 80 प्रतिशत आर्थिकी को नियंत्रित करने वाले राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों अथवा उनके प्रतिनिधियों को अपनी संस्कृति के ऐसे मूल तत्वों से भी रूबरू कराया जिनमें वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर बेहतर दुनिया निर्मित करने की क्षमता है जैसे, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, अहिंसा परमो धर्म आदि। भारत ने 140 करोड़ जनसंख्या एवं 55 देशों वाले अफ्रीकी संघ को जी-20 का स्थायी सदस्य बनवाकर उसकी आवाज बनने का कार्य किया है। वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत एवं भारत-मध्य-पूर्व यूरोप कॉरिडोर पर सहमति को इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है।

भारतीय संसद द्वारा महिलाओं को लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें आरक्षित करने संबंधित विधेयक 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' पारित किया जाना एक ऐतिहासिक कदम है। सरकार की दृढ़ इच्छा-शक्ति से यह स्पष्ट है कि यह विधेयक न्यूनतम समय में कानून का रूप ले लेगा। यह कानून देश की आधी आबादी की आवाज को और प्रभावी ढंग से सुनने का मार्ग प्रशस्त करेगा। महिला आरक्षण कानून सहित भारत की हालिया उपलब्धियां जैसे, जी-20 का सफल आयोजन एवं सर्वसम्मत नई-दिल्ली घोषणा पत्र, विश्व की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनना, सबसे युवा देश होना एवं चंद्रयान-3 तथा आदित्य एल०-1 की सफलता, विश्व बिरादरी में उसके बढ़ते कद की परिचायक हैं। वर्तमान दौर को देश से मानसिक गुलामी का कुहासा छंटने और स्वः रूपी किरणों के दुनिया में फैलने का स्वर्णकाल कहना सर्वथा उचित होगा। जी-20 शिखर सम्मेलन के पहले ही दिन शत-प्रतिशत आम सहमति एवं बिना किसी फुटनोट के नई-दिल्ली घोषणा पत्र जारी होना, न केवल भारत की कूटनीतिक सफलता है बल्कि उसमें दुनिया के बढ़ते भरोसे का भी द्योतक है। शिखर सम्मेलन की सफलता ने भारत के बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन करने की क्षमता, बढ़ते अंतरराष्ट्रीय प्रभाव एवं भू-राजनैतिक चुनौतियों एवं अवसरों का मर्मज्ञ होने के साथ ही कूटनीतिक दक्षता का भी प्रकटीकरण किया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जी-20 के सफल नेतृत्व ने भारत को नई अंतरराष्ट्रीय कक्षा में स्थापित किया है। भारत ने जी-20 आयोजन के माध्यम से भू-राजनैतिक विषयों पर एकमत तैयार करने के साथ ही दुनिया की लगभग 80 प्रतिशत आर्थिकी को नियंत्रित करने वाले राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों अथवा उनके प्रतिनिधियों को अपनी संस्कृति के ऐसे मूल तत्वों से भी रूबरू कराया जिनमें वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर बेहतर दुनिया निर्मित करने की क्षमता है जैसे, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, अहिंसा परमो धर्म आदि। भारत ने 140 करोड़ जनसंख्या एवं 55 देशों वाले अफ्रीकी संघ को जी-20 का स्थायी सदस्य बनवाकर उसकी आवाज बनने का कार्य किया है। वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत एवं भारत-मध्य-पूर्व यूरोप कॉरीडोर पर सहमति को इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है। 'आज का युग युद्ध का नहीं, आने वाली चुनौतियों का सामना करने का है' जैसा संदेश विश्व को देने के लिए भला बुद्ध एवं गांधी के भारत से बेहतर स्थान क्या हो सकता था? भारतीय सभ्यता के जीवन मूल्यों, उसकी सांस्कृतिक धरोहर तथा प्राचीन कला, ज्ञान, विज्ञान की झलक देने के लिए, मेहमानों का राजघाट पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया, कार्यक्रम स्थल पर 13-वीं सदी के कोणार्क-चक्र की प्रतिमूर्ति तथा योग मुद्राओं एवं दुनिया के सबसे शुरुआती अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में से एक नालंदा विश्वविद्यालय की प्रतिमाएं रखी गईं। अष्ट-धातु से निर्मित नटराज प्रतिमा के माध्यम से भारत ने यह संदेश भी दिया कि भारत मानव मूल्यों का पालन करते हुए समावेशी विकास के मार्ग पर चलता रहेगा और उसकी इस यात्रा को अवरुद्ध करने वालों को नटराज की ही भांति पैर से दबाकर संहार करने में संकोच नहीं करेगा।

जी-20 की एक प्रमुख घटना यह भी रही कि इसमें देश का नाम इंडिया प्रयोग न करके भारत प्रयोग किया गया। जी-20 के समापन के बाद भी इंडिया बनाम भारत की बहस जारी है। आशा है कि स्व जागरण के काल में देश के जनमानस को उसकी सभ्यता, संस्कृति, विरासत के इतर भाव जागृत करने वाली पहचानों एवं प्रतीकों से जल्द छुटकारा मिलेगा। विदित हो कि न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा का सत्र जारी है। ऐसे में यक्ष प्रश्न यह है कि भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के दरवाजे अभी भी बंद क्यों हैं? ■

महिलाओं के सहयोग के बिना देश की उन्नति संभव नहीं

भारतीय विचार परम्परा में पुरुष और महिला को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। महिला और पुरुष दोनों के अपनी-अपनी प्राकृतिक गुण संपदा के आधार पर साथ चलने से ही सृष्टि चलती है। महिलाओं में कई भिन्न-भिन्न कार्यों को साथ-साथ कर पाने की नैसर्गिक क्षमता होती है। पुरुष अपनी आजीविका के माध्यम से परिवार को चलाने और उसे सुरक्षा प्रदान करने का काम करते हैं तो महिलाएं इन कार्यों के साथ-साथ संतान को अपने वात्सल्य भाव से योग्य बनाने और परिवार को एक बनाए रखने की जिम्मेदारी भी कुशलता से निर्वहन करती हैं। महिलाएं पुरूषों से किसी भी तरह कमतर नहीं हैं, अपितु जो कार्य पुरुषों के लिए सम्भव नहीं, वह कार्य भी महिला करने में समर्थ है । देश का 50 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है, उनके सहयोग के बिना देश की उन्नति संभव नहीं ।

संघ में व्यक्ति नहीं परिवार जुड़ता है। महिलाओं के सहयोग के बिना पुरूषों के लिए संघ कार्य को पर्याप्त समय देना सम्भव नहीं। संघ के व्यापक तौर में सीधे रूप से सेवा, संपर्क, प्रचार, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता आदि में भी मातृशक्ति सहयोग कर रही हैं। जिस प्रकार महिलाएं परिवार का कुशल नेतृत्व करती आई हैं, उसी प्रकार आज के समय में समाज के भी प्रमुख कार्यों में नेतृत्व दे रही हैं, यह हमारे लिए अच्छे संकेत हैं ।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी सशक्तिकरण आंदोलन पश्चिम की देन माना जाता है, लेकिन वहां पुरुष को अधिकार-सक्षम और महिला को गुलाम मान कर नारी मुक्ति पर बल दिया गया । इसका परिणाम वहां परिवार और विवाह संस्था पर खतरे के रूप में सामने आया। भारत में परिवार संस्था कई विषम परिस्थितियों को झेलने के बाद भी सुदृढ़ बनी हुई है, जिससे सीख लेते हुए आज पश्चिम में भी परिवार संस्था को पुनः मजबूत करने के प्रयास होने लगे हैं।

पुरुषों को महिलाओं को देवी अथवा दासी मानने के स्थान पर वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप उनके प्रति अपनी सोच बदलनी होगी। पौराणिक कथाओं में ऐसे कई उल्लेख मिलते हैं कि जब देवता भी किसी कार्य को पूर्ण नहीं कर सके तो वे उसके लिए जगतजननी की शरण में गए। इसलिए महिलाओं का अपने कल्याण के लिए पुरुषों की ओर देखने के बजाय स्वयं ही जाग्रत होना होगा।

मातृशक्ति का उत्थान इस राष्ट्र की उन्नति के लिए अनिवार्य शर्त है, जबकि रीति-रिवाज,

-डॉ. मोहनराव भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

परिवेश और परिस्थिति के अनुसार भारत में अलग-अलग स्थानों पर महिलाओं की स्थिति में बहुत बड़ा अंतर है। समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख भूमिका निभा रही महिलाएं मातृशक्ति के उत्थान के लिए आगे आएं, यह राष्ट्रजीवन के लिए आवश्यक है। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि कुटुम्ब में संस्कारों का स्तर गिरने और इंटरनेट सहित बाहरी प्रभावों के कारण बाल मनोवृत्ति पर हो रहे दुष्प्रभाव, दबे पांव, चोरी-छिपे आ रहे सांस्कृतिक संकट से अपने परिवार और समाज को बचाने के लिए महिलाओं को ही आगे आना होगा।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा जयपुर में 28 सितम्बर, 2018 को आयोजित मातृशक्ति संगम में दिए गए उद्बोधन का एक अंश)

''व्यक्ति निर्माण की शाखा पद्धति पुरुष व महिला के लिए संघ तथा समिति की पृथक चलती है। बाकी सभी कार्यों में महिला-पुरुष साथ में मिलकर ही कार्य संपन्न करते हैं। भारतीय परम्परा में इसी पूरकता की दृष्टि से विचार किया गया है। हमने उस दृष्टि को भुला दिया, मातृशक्ति को सीमित कर दिया। सतत आक्रमणों की परिस्थिति ने इस मिथ्याचार को तात्कालिक वैधता प्रदान की तथा उसको एक आदत के रूप में ढाल दिया। भारत के नवोत्थान के ऊषाकाल की पहली आहट से हमारे सभी महापुरुषों ने इस रूढ़ि को त्यागकर; मातृशक्ति को एकदम देवता स्वरूप मानकर पूजाघर में बंद करना अथवा द्वितीय श्रेणी की मानकर रसोईघर में मर्यादित कर देना, इन दोनों अतियों से बचते हुए उनके प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा समाज के सभी क्रियाकलापों में, निर्णय प्रक्रिया सहित सर्वत्र बराबरी की सहभागिता पर ही जोर दिया है । तरह-तरह के अनुभवों की ठोकरें खाकर विश्व में प्रचलित व्यक्तिवादी तथा स्त्रीवादी दृष्टिकोण भी अब इस तरफ ही अपना विचार मोड़ रहा है।

2017 में विभिन्न संगठनों में काम करने वाली महिला कार्यकर्ताओं ने मिलकर भारत की महिलाओं का बहुत व्यापक व सर्वांगीण सर्वेक्षण किया। वह शासन को भी पहुंचाया गया। उस सर्वेक्षण के निष्कर्षों से भी मातृशक्ति के प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा उनकी समान सहभागिता की आवश्यकता अधोरेखित होती है। यह कार्य कुटुम्ब स्तर से प्रारम्भ होकर संगठनों तक स्वीकृत व प्रचलित होना पड़ेगा तब और तभी मातृशक्ति सहित सम्पूर्ण समाज की संहति राष्ट्रीय नवोत्थान में अपनी भूमिका का सफल निर्वाह कर सकेगी।'' (संघ स्थापना दिवस, विजयादशमी (5 अक्टूबर, 2022) के उद्बोधन से) ■

नारी वंदन की प्राचीन परम्परा

-डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा मीडिया एवं शोध संस्थान

भारतीय संसद का के नूतन भवन की कार्यवाही एक ऐतिहासिक विधेयक के पारित होने से प्रारंभ हुई। हांलाकि संसद भवन का उद्घाटन 28 मई, 2023 को ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों से हो चुका था, तथापि ब्रिटिश कालीन संसद भवन से विदाई लेने और नए संसद भवन में प्रवेश के लिए एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। गणेशोत्सव के दिन 19 सितम्बर, 2023 को संसद के नए भवन में प्रवेश के साथ ही 20 सितम्बर, 2023 को "नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023" पारित हो गया। जिसे सामान्य तौर पर महिला आरक्षण विधेयक के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही भारत में नारी विमर्श और उत्कर्ष का नया अध्याय का प्रारंभ हुआ।

यूँ तो स्त्री विमर्श और वैचारिक मंथन की भारत में प्राचीन काल से ही एक परम्परा रही है किन्तु महिला आरक्षण विधेयक के पश्चात भारतीय समाज में नारी की स्थिति और उनके भविष्य को लेकर मंथन ने जोर पकड़ा है। वस्तुतः एक हजार वर्ष से अधिक की पराधीनता के कालखंड में भारतीय समाज में अनेक कुरीतियों ने जड़ें जमा ली। इसमें जातिभेद और छुआ-छूत सबसे प्रमुख है तो वहीं मुगलकाल में सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बहु विवाह, बाल विवाह और बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति से संबंधित कुरीतियों ने जड़ें पकड़ लीं। इसके पश्चात ब्रिटिश काल में तत्कालीन अंग्रेजपरस्त लेखकों के द्वारा यह विचार प्रत्यारोपित किया गया कि भारतीय समाज में स्त्री दीन-हीन और याचक है। मुगल आक्रमणकाल और उसके पश्चात यूरोपीय लुटेरों के द्वारा भारत में स्थापित किए गए उपनिवेश में भारत की आधी आबादी अर्थात मातृशक्ति का सामाजिक और आर्थिक पतन हुआ, ऐसी विद्रूप स्थिति का लाभ लेते हुए यह वर्ग आज भी नारी स्वतंत्रता और नारी अस्मिता के यूरोपीय मानकों पर वर्तमान भारतीय नारियों का आंकलन करता है और विश्व समुदाय के समक्ष भारत में नारी की स्थिति को गलत तरीके से प्रस्तुत करता है। भारत की संस्कृति को स्त्रियों का शोषण करने वाली एवं पुरुष प्रधान संस्कृति के रूप में स्थापित करने वाले तथाकथित नारीवादी बुद्धिजीवियों को भारत की प्राचीन जीवन प्रणाली का अध्ययन करने की महती आवश्यकता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते-वास्तविकता तो यह है कि भारत की संस्कृति में जीवन का उद्गम और अंत स्त्री शक्ति में ही समाहित है। स्त्री हमारी संस्कृति में पूज्य है, शक्ति के रूप में स्त्री को ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला एकमात्र धर्म सनातन हिन्दू धर्म ही है। कदाचित ही कोई भारतीय परिवार ऐसा होगा जिसकी केंद्रीय भूमिका में स्त्री न हो। एक मकान को घर बनाना स्त्री के द्वारा ही संभव है। पर्व त्योहारों एवं उत्सव की पुण्यभूमि भारत में स्त्री सदैव केंद्र में रही है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में पूजन और अर्चन को तब तक पूर्ण नहीं समझा जाता है जब तक पत्नी के रूप में अर्धांगिनी अपने पति के साथ स्थान ग्रहण न करे। माता सीता अपने बालकों की शिक्षा दीक्षा के लिए ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में प्रवासकाल में थी तब भगवान राम ने माता सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनवाकर यज्ञ विधान में स्थान ग्रहण कराया था। प्रभु राम द्वारा सीताजी के त्याग को कथित बुद्धि विलासियों

ने ऐसा प्रत्यारोपित किया कि भारतीय स्वयं भ्रमित हो गए। इस सन्दर्भ में महर्षि वाल्मीकि रचित 'रामायण' के उत्तरकाण्ड के 42वें सर्ग के 31–35 श्लोक में पढ़ा जा सकता है; जहां श्रीराम अपनी गर्भवती पत्नी सीता से पूछते हैं कि इस अवस्था में आपकी परम इच्छा क्या है? तब सीताजी कहती हैं कि हे राघव! मैं पवित्र तपोवनों में रहकर महान ऋषि-मुनियों की सेवा-सत्संग का लाभ उठाना चाहती हूं ताकि मेरे गर्भस्थ शिशु क्षत्रिय तेज के साथ ब्रह्मतेज से भी संयुक्त हों। प्रत्युत्तर में राम कहते हैं- ऐसा ही होगा, मैं कल ही आपको तपोवन भेजने की व्यवस्था करूंगा। यह उद्धरण सिद्ध करता है कि सीताजी अपनी भावी संतान की उत्तम परवरिश के लिए स्वेच्छा से वन गयीं न कि श्रीराम ने उन्हें निष्कासित किया था। लेकिन इतिहास के विद्रूप के हम आज भी साक्षी हैं।

महाभारत के उद्योग पर्व में भी कहा गया है कि-

पूजनीयाः महाभागाः, पुण्याश्च ग्रहदीप्तयः,
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः॥

अर्थात् पूजायोग्य, अतिभाग्यशालिनी, पुण्य कर्म वाली और गृह की शोभा बढ़ाने वाली स्त्रियों को ही घर की लक्ष्मी कहा गया है। अतः नारियों की विशेष रूप से रक्षा की जानी चाहिए।

महाभारत में ही एक अन्य स्थान पर कहा गया है कि-

पूज्या लालयितव्याश्च, स्त्रियो नित्यं जनाधिपः।
स्त्रियो यत्र हि पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता॥
अपूजिताश्च यत्रैताः सर्वास्तत्राऽफलाःक्रियाः।
तदा चैतत्कुलम् नास्ति, यदा शोचन्ति
जामयः॥ - १३.८१.५, महाभारत

अर्थात् हे राजन् ! स्त्रियों का सदा सत्कार करना चाहिए और इन्हें लाड़ से रखना चाहिए। जहां स्त्रियों का सत्कार किया जाता है वहां दिव्य गुण संपन्न आत्माएं जन्म लेती हैं। और जहाँ स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल होती है, उसका परिवार नष्ट हो जाता है, वहां पत्नी ,बहू आदि स्त्रियां

शोकमग्न रहती है ।

भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, कुटुम्ब की अवधारणा, कुटुम्ब का आधार स्त्री ही है, कुटुम्ब में स्त्री के अवदान के संदर्भ में कहा गया है कि-

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते॥
-१२.१४४.६, महाभारत

अर्थात भवन को घर नहीं कहते हैं अपितु गृहिणी से ही घर कहलाता है। जो घर गृहिणी से विहिन है, वह तो जंगल से भी बढ़कर सूना है।

मनुस्मृति का निम्न श्लोक तो अत्यंत प्रसिद्द है -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
यत्रास्तु ना पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥
३.५६, मनुस्मृति

अर्थात जिस स्थान पर नारी की पूजा होती है उसका सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं, वह स्थान मंगलकारी हो जाता है, इसके विपरीत जहां नारी का पूजन नहीं होता, वहां मंगल भावना से किए जाने वाले सभी कार्य भी असफल हो जाते हैं। विश्व के नारीवादी साहित्य में भी ऐसा सन्दर्भ देखने में नहीं आता है।

इसी प्रकार का भाव महर्षि गर्ग के द्वारा निम्न श्लोक में अभिहित होता है, महर्षि गर्ग कहते हैं-

यद् गृहे रमते नारी लक्ष्मीस्तद् गृहवासिनी।
देवता कोटिशो वत्सः न त्यजन्ति गृहं ही तत्॥

अर्थात् जिस घर में सद्गुण भूषित नारी आनन्दपूर्वक निवास करती है, उस घर में निरंतर लक्ष्मी का वास होता है। हे वत्स! कोटि देवता भी ऐसे घर का त्याग नहीं करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है कि भगवान श्रीराम बालि से कहते हैं-

अनुज वधू, भगिनी, सुत नारी,
सुन! सठ कन्या सम ए चारी।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकई जोई,
ताहि बधे कछु पाप न होई॥

अर्थात् छोटे भाई की वधू, बहन, पुत्र की पत्नी, कन्या के समान होती है। इन्हें कुदृष्टि से देखने वाले का वध कर देना कतई पाप नहीं है।

हिंदू धर्म शास्त्रों में ऐसे अनेक विवरण उपलब्ध है जिनमें नारी के पूजन, उसके संरक्षण, संवर्धन और सम्मान के विषय में स्पष्ट निर्देश हैं। भारतीय संस्कृति में उल्लेखित ऐसे द्रष्टान्त भारतीय संस्कृति में स्त्री का सम्मानजनक महत्व सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

स्त्री और पुरुष को समान अधिकार देने का भारतीय परंपरागत उदाहरण सबसे प्राचीन है। अर्धनारीश्वर के रूप में शिव-शक्ति को प्रतिबिंबित कर भारतीय संस्कृति ने स्त्री और पुरुष को एक दूसरे का पूरक होने का जो सिद्धांत प्रतिपादित किया है वह विश्व में अतुलद्रनीय है। आदिशक्ति के रूप में विश्व का मूल कारण स्त्री को स्वीकार करने वाली भारतीय संस्कृति कैसे और कब स्त्री विरोधी या स्त्री को दोयम दर्जे का मानने वाली संस्कृति रूप में दुष्प्रचारित कर दी गई, पता भी न लगा। हमारी संस्कृति में नारी को 'योषा' संबोधित किया गया, जिसका अर्थ नारी नर की सहयोगिनी है। 'वामति सौन्दर्यम्' कहकर उसे

वामा कहा गया। जिसका अर्थ है जो सौन्दर्य से संसार को बुनती है या बिखेरती है।

भारतीय संस्कृति में नारीवाचक शब्दों की बहुलता है जैसे कि भाषा, सभा, संसद, भक्ति, नीति, पृथ्वी, दया, क्षमा, वीरता, कथा, कहानी, तपस्या, पूजा, अर्चना, ज्योति, दीपशिखा, अग्नि, आहुति जैसे अनगिनत शब्द हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं जो अपने आप में मात्र शब्द नहीं है, स्वयं शक्ति का प्रतिरूप हैं। हमने अपनी राष्ट्रीय चेतना को भारत माता कहा है न कि भारत पिता, संपूर्ण विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने राष्ट्र के रूप में स्वयं को एक देदीप्यमान चेतन शक्ति 'भारत माता' के रूप में अंगीकृत किया है। जिस भूमि के पुरुष अपनी माताओं का आशीष लेकर युद्ध भूमि पर जाते हैं और पत्नियाँ तिलक कर उन्हें युद्ध भूमि में भेज गौरवान्वित होती हैं, आश्चर्य होता है यह सोचकर कि ऐसे समाज को पुरुषप्रधान समाज होने का कलंक आखिर किसने लगा दिया और हम तन्द्रावश उसे सत्य समझने की भूल भी कर बैठे।

वैदिक काल की ऋषिकाएं : तथाकथित नारीवादी आरोप लगाते रहे हैं कि भारत में स्त्री को शिक्षा से वंचित रखा गया, इस दृष्टि से उन्हें भारतीय शास्त्रों का गूढ़ अध्ययन करने की आवश्यकता है। वैदिक स्त्री ऋषिकाओं की संख्याओं की दृष्टि से यदि अकेले ऋग्वेद को ही लें तो उसमें कुल मिलाकर लगभग 23 ऋषिकाएँ है। ऋग्वेद में गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, अदिति, इन्द्राणी, लोपामुद्रा, सार्पराज्ञी, वाक्क, श्रद्धा, मेधा, सूर्या व सावित्री, अहल्या, अरुन्धती, मदालसा जैसी अनेक विदुषियों का उल्लेख मिलता है। ब्रह्मवादिनी विश्ववारा वेदों के अनुसंधान के लिए विख्यात थीं, जिन्होंने शास्त्रार्थ में राजा जनक को पराजित किया था। माता अनुसुइया इतनी विद्वान थीं कि वनगमन के काल में माता सीता ने उनसे विशेष शिक्षा ग्रहण की थी।

यही सनातन परम्परा आठवीं सदी तक स्पंदित थी। आदि शंकराचार्य का जब मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ हुआ तब मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती ने ही न्यायाधीश की भूमिका का निर्वहन किया था, शास्त्रार्थ की मर्यादा का पालन करने वाले ऐसे अद्भुत उदाहरण को हम किसी और संस्कृति में नहीं पा सकते हैं जहां शास्त्रार्थ करने वालों में से किसी एक की पत्नी ही न्यायविद् के रूप में प्रतिष्ठित की जाए। ध्यातव्य है कि पति के पराजित हो जाने के पश्चात भारती ने पति के आधे अंग के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करते हुए शंकराचार्य को स्वयं से शास्त्रार्थ करने की

चुनौती दी थी, जिसे शंकराचार्य ने स्वीकार किया था।

भारत के अतिरिक्त विश्व का ऐसा कौन सा देश हैं जहाँ संतानें अपनी माँ के नाम से जानी जाती थीं? जैसे कौशल्यानंदन, सुमित्रानंदन, देवकीनंदन, गांधारीनंदन, कौन्तेय व गंगापुत्र, पार्थ आदि। इसी तरह पत्नी का नाम पति से पहले रखने की भारतीय परम्परा है- लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, सीताराम व राधाकृष्ण इत्यादि। क्या किसी अन्य धर्म-संस्कृति में नारी को मान देने के ऐसे उदाहरण मिलते हैं?

स्वयंवर से लेकर रणक्षेत्र तक : जीवनसाथी को अपनी इच्छानुसार चयनित करने एवं वरण करने के लिए भारतीय समाज में स्वयंवर की प्रथा हजारों वर्षों पहले थी, वर्तमान में स्त्री स्वातंत्रय की बात करने वाले बुद्धिजीवियों को स्त्रियों द्वारा अपना वर चुनने की स्वतंत्रता के ऐसे उदाहरण आधुनिक यूरोप में भी नहीं मिलेंगे। प्रेम विवाह के रूप में गंधर्व विवाह सहित विवाह के भी अनेक प्रकार प्रचलित थे। नारी के प्रति ऐसी सम्मानजनक स्वातंत्र्य प्रणाली विकसित करने वाले हिन्दू समाज को बड़ी ही चतुराई से षडयंत्रपूर्वक इन तथाकथित नारीवादियों ने नारी को परतन्त्र बनाने वाले समाज के रूप में प्रचारित करने का दुष्कृत्य किया है।

भारतीय ग्रंथों में ऐसी अनेक नारियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने अपने पति के साथ युद्ध में भी भाग लिया। महाराजा दशरथ के साथ माता कैकई का युद्ध में भाग लेना और उनके मूर्छित हो जाने पर युद्ध भूमि से सुरक्षित निकालना इसका एक विशिष्ट उदाहरण है। कुन्ती, माद्री, द्रौपदी आदि नारियां शौर्य, पराक्रम और तेजस्विता की पर्याय रही हैं। जिस काल में यूरोप की नारियां घर के बाहर नहीं निकलती थी उस काल में हमारे यहां महान नारियां विद्वान उपाध्यिकाओं, प्रशासिकाओं और वीरांगनाओं की भूमिका में सक्रिय थीं।

सातवाहन शासिका नागणिका, शुंग राजवंश की प्रखर प्रशासिका धारिणी, वाकाटक शासिका प्रभावती गुप्त, कन्नौज की राजश्री एवं चोलपट्ट महिषी लोकाम्बा देवी अपने युग की नारीशक्ति की श्रेष्ठतम् उदाहरण हैं। कश्मीर की रानी दिद्दा, काकतीय वंश की रानी रुद्राम्बा, माता मीराबाई, देवलरानी, रूपमती, चारुमती, अक्का महादेवी, रामी जानाबाई, लालदेद, माता सहजोबाई, माता मुक्ताबाई, माता जीजा बाई, रानी दुर्गावती, रानी कर्मावती, रानी अहिल्याबाई होलकर, रानी ताराबाई, महारानी अब्बक्का, रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई,

रानी चेनम्मा, रानी अवंतिबाई, वीरांगना भाग कौर, ऊदा देवी, रानी वेलु नाचियार, वीरांगना कुइली, बेलावाड़ी मल्लम्मा, वीरांगना दलेर कौर, नायकुरालु नागम्मा जैसी अनगिनत महान नारियां हैं, जिन्होंने कुशल प्रशासिका, वीर योद्धा, रणनीतिकार या धार्मिक आंदोलन की जनक होते हुए मध्यकालीन भारत में भारतीय अस्मिता और धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसी अनेक नारियों पर शोध करना शेष है।

हमारी मान्यता है कि 'पत्नात् त्रायते' अर्थात् नारी अपने पति को पतन से बचाती है, अतः इसकी संज्ञा पत्नी है। दुर्भाग्य देखो कि इस्लाम के आक्रमण के बाद भारतीय समाज में पतन से रक्षा करने वाली स्त्रियों का पतन प्रारंभ हो गया। विधर्मियों से कन्याओं की रक्षा करने के लिए और रक्त की शुद्धता बचाने के लिए अल्पायु में बाल विवाह करने का निर्णय हिन्दू समाज को लेना पड़ा, समाज की बहन बेटियों की सुरक्षा की दृष्टि से पर्दा प्रथा आ गयी, इसके पूर्व भारत में बाल विवाह और पर्दा प्रथा का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। विधर्मियों का पाशविक व्यवहार ऐसा कि स्त्री की मृत देह के साथ भी दुराचार करते थे, विधर्मियों से अपने सम्मान और प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए हजारों की संख्याओं में हमारी माताएं-बहने अग्नि ज्वाला में देह दहन कर लेती थी जिसे 'जौहर' कहा गया। आत्म सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए सार्वजनिक स्त्री-बलिदान के ऐसे उदाहरण पूरे विश्व में कहीं नहीं मिलते हैं। तत्कालीन इतिहास साक्षी है कि इस्लाम के आगमन के पश्चात का भारतीय इतिहास ही सामाजिक कुप्रथाओं, स्त्रियों पर बढ़ते शोषण, दुराचार से रक्तरंजित इतिहास में परिवर्तित हुआ जिसे आधार बनाकर अंग्रेजों और उनके मानसपुत्रों ने भारत की छवि धूमिल करने हेतु उपयोग किया।

आधुनिक भारत का निर्माण : उपनिवेशवादी ब्रिटिश शासन के काल में भी भारत की नारियों ने मातृभूमि पर आए संकट का सामना करते हुए चुनौती से हार नहीं मानी, इस काल में भी अनेक क्रान्तिकारी नारियों ने देश की स्वाधीनता हेतु, समाज के नवजागरण हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कादंबिनी गांगुली, स्वर्णकुमारी देवी, भीकाजी कामा, सरला देवी चौधुरानी, ऐनी बेसेंट, भगिनी निवेदिता, सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, विजय लक्ष्मी पंडित, दुर्गाबाई देशमुख, कमला देवी चट्टोपाध्याय, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे, पंडिता रमाबाई, चंद्रमुखी बसु, आनंदी गोपाल जोशी, प्रतिलता वाद्देदार, दुर्गारानी वोहरा, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, दुर्गाबाई देशमुख, कस्तूरबा गांधी, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रभावती देवी, ज्योतिर्मयी गांगुली, लतिका घोष, आशालता देवी, नेली सेनगुप्ता, मातंगिनी हाजरा, रानी गैन्दिन्ल्यु जैसी नारियों के योगदान से हम परिचित हैं किन्तु अनेक ऐसी नारियां हैं जिनका उल्लेख इतिहास के पन्नों में भी नहीं हुआ, ऐसी गुमनाम नायिकाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए नई पीढ़ी से उनका परिचय कराना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य बनता है।

यह भारत की नारी ही है जिसने विपरीत परिस्थितियों में घर-परिवार की परिसीमा में रहते हुए भी अपनी धर्म-संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और संवर्धित किया, व्रत,पर्व, तीज-त्यौहार के माध्यम से आज भी वे दैनिक जीवन में धर्म-संस्कृति को स्पंदित रखे हुए हैं। भारत के सफल पुरुषों के पीछे भी उनकी माता अथवा पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय नारी भारत की परिवार एवं कुटुम्ब प्रणाली की केंद्रीय धुरी है, भारतीय समाज इनके आलंबन पर ही गतिशील होता है इसलिए तथाकथित नारी स्वतंत्रतावादियों ने आधुनिकता की आड़ में भारत की नारियों को सनातन संस्कृति के मूल धारा से काटने का दुष्प्रयास किया। वर्तमान नवजागरण काल में प्रत्येक भारतीय को इस दृष्टि से सचेत रहते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के अलोक में अधुनातन, समर्थ और सशक्त भारत के निर्माण में सहयोग देना है।

यह एक बार फिर उल्लेखनीय है कि भारतीय समाज में छुआ-छूत, ऊँच-नीच, अशिक्षा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों का आगमन इस्लाम के आगमन के बाद ही हुआ है, भारत के विरुद्ध स्थापित किये गए भ्रमित एवं असत्य विमर्श के प्रति सचेत रहते हुए शोधपरक स्वाध्याय करना और अपनी नई पीढ़ी को सनातन सांस्कृतिक मानबिंदुओं के प्रति समर्पण और निष्ठा में दीक्षित करने का हमारा महत्वपूर्ण दायित्व है। आजादी का अमृतकाल और सांस्कृतिक नवजागरण काल में यह अनुकूल समय है।

भारत स्वयं को शक्ति स्वरूप मानता है, माँ भारती के रूप में भारत का सांस्कृतिक अस्तित्व शक्ति (स्त्री) प्रधान है, शक्तिविहीन स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में भारत की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारत की शाक्त चेतना को धारण करने से ही हम भारत की चेतना का साक्षात्कार करने में समर्थ होंगे, इसे अंगीकृत करने से ही हम भारतीय कहलाने के अधिकारी हैं। ■

विश्व का एकमात्र व्यवस्थित सुगठित महिला संगठन

डॉ.सुनीता शर्मा
लेखिका व शिक्षाविद

प्रत्येक राष्ट्र जो उन्नति चाहता है दिनों-दिन प्रगति के मार्ग पर बढ़ना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है कि वह अपनी समृद्धशाली संस्कृति और इतिहास को कभी ना भूले, क्योंकि भूतकालीन कृतियां व घटनाएं ही भविष्य की पथ प्रदर्शक होती हैं। हम अपनी नींव, अपनी संस्कृति पर अडिक रहकर वर्तमान और भविष्य की ओर कदम बढ़ाएं तो देश और समाज का निर्माण संभव है। इसी महान विचार को लेकर राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हुई।

राष्ट्र सेविका समिति पूरे विश्व में महिलाओं का सबसे बड़ा और सुदृढ़ महिला संगठन है। देश को आजाद हुए आज 77 वर्ष हो गए हैं। देश की स्वतंत्रता से भी 10 वर्ष पूर्व राष्ट्र सेविका समिति का कार्य प्रारंभ हुआ । 87 वर्षीय राष्ट्र सेविका समिति आज एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुकी है, जिसकी शाखाएं देश के प्रत्येक प्रांत, जिले, कस्बे तक फैली हुई हैं तथा विश्व के सुदूर देशों में भी समिति का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। समिति का उद्देश्य केवल स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं था अपितु देश के निर्माण और स्वतंत्रता में तन-मन-धन से योगदान देना था। राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना से पूर्व देश में इस प्रकार का कोई भी महिलाओं का अखिल भारतीय संगठन कार्य नहीं कर रहा था।

किसी भी संगठन का कार्य व्यापक होता है और संस्था मर्यादित होती है। राष्ट्र सेविका समिति का जन्म राष्ट्र के विचार से हुआ था। राष्ट्र का चंहुमुखी विकास करना ही इसका उद्देश्य है। दायित्व हमेशा अपने अधिकारों के विचार से नहीं अपने कर्तव्यों के विचार से उठाया जाता है। समिति में सेविकाओं ने स्वयं दायित्व स्वीकार किया है, किसी के कहने या

राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका और आद्य संचालिका श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर ने महिलाओं में छिपी शक्तियों को उस समय पहचाना जब नारी सशक्तिकरण की बात से कोई परिचित भी नहीं था। 25 अक्टूबर 1936 विजयदशमी के दिन महिलाओं के एक ऐसे संगठन की नींव रखी गई जो व्यक्ति निर्माण के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी योगदान दे।

जोर जबरदस्ती से नहीं। राष्ट्र सेविका समिति की संकल्पना का भी विचार यही था कि स्त्री भी पुरुषों के समान राष्ट्रहित में कार्य करें। राष्ट्र स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर बनता है और

संस्थापिका व आद्य संचालिका श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर

महिलाएं संख्या में पुरुषों के समान हैं। मानव जीवन में भी स्त्री और पुरुष की पूर्णता से ही परिवार और समाज संगठित व मजबूत होते हैं। भगिनी निवेदिता ने कहा था कि हम महिलाओं से भी राष्ट्र है। राष्ट्र की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। राष्ट्र सेवा यह एक व्रत है और व्रत जीवन में एक बार ही लिया जाता है। समिति सेविकाओं ने अपनी आंखें खोलकर इस व्रत को आजीवन करने का संकल्प लिया है। जब मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तब वह व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना से ऊपर उठ जाता है। समिति की सेविकाएं भी राष्ट्रभाव लिए देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तात्पर्य हैं। देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए ऐसे संगठनों की आवश्यकता होती है जो मानव जाति को संगठित कर सके। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र सेविका समिति संगठन की स्थापना हुई, जो महिलाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना जागृत कर समाज हित में कार्य कर सके ।

राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका और प्रथम संचालिका लक्ष्मीबाई केलकर इस बात से भली भांति परिचित थी कि केवल समाज की अर्ध शक्ति पुरुष ही देश को स्वतंत्रता नहीं दिलवा सकते हैं। उनके अनुसार अर्धशक्ति से राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है। इसलिए डॉक्टर हेडगेवार जी के समक्ष जब श्रीमती

सरस्वती ताई आप्टे
द्वितीय प्रमुख संचालिका

ऊषा ताई चाटी
तृतीय प्रमुख संचालिका

प्रमिला ताई मेढ़े
चतुर्थ प्रमुख संचालिका

शांतक्का जी
वर्तमान प्रमुख संचालिका

लक्ष्मीबाई केलकर ने यह प्रश्न रखा कि आप के संगठन में केवल पुरुष ही हैं और ऐसी स्थिति में राष्ट्र का निर्माण नहीं होगा क्योंकि आपके पास केवल अर्थ शक्ति है। डॉ.हेडगेवार जी ने कहा कि अगर आप महिलाओं को जागृत करना चाहती हैं तो स्वयं से ही महिलाओं के लिए संगठन की स्थापना करें। डॉक्टर हेडगेवार के मार्गदर्शन से उन्होंने संगठन की स्थापना की और इस प्रकार राष्ट्र सेविका समिति संगठन की नींव पड़ी। इस संगठन की विचारधारा पुरुषों के संगठन के समानांतर है और यह एक स्वतंत्र संगठन है। डॉक्टर हेडगेवार व महात्मा गांधी के आदर्शों का भी लक्ष्मीबाई केलकर पर बहुत प्रभाव रहा। उन्होंने रामायण के महत्व को समझ कर बाद में स्थान- स्थान पर माता सीता के चरित्र व रामायण पर व्याख्यान दिए। देश के विभाजन के समय पर सेविकाओं के आह्वान पर लक्ष्मीबाई केलकर कराची पहुंचीं और सेविकाओं को विषम परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं के जागरण के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया ।

संस्थापिका लक्ष्मीबाई केलकर ने अपने वैधव्य को अभिशाप न मानकर शक्ति माना और राष्ट्र निर्माण के कार्य में जुट गईं तथा वर्धा में विजयदशमी के दिन 1936 में समिति की स्थापना की। वंदनीय लक्ष्मीबाई का संपूर्ण जीवन अनुकरणीय रहा है।

समिति की स्थापना करने के पश्चात यह विचार भी रहा की बहनों को ऐसा क्या सिखाया जाए जिससे कि वह राष्ट्र धर्म के कार्य में जुटें इसलिए दिन प्रतिदिन समिति के लिए योजनाएं बनने लगी। महिलाओं को प्रतिदिन निश्चित समय पर मिलने का आयोजन किया गया ताकि महिलाएं सुशीला, सुधीरा, समर्था बनें तथा उनके हृदय में हिंदुत्व का भाव जगे इसलिए महिलाओं को सैनिक पद्धति के अनुसार शाखा का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। समिति की बहनों के स्वास्थ्य का महत्व समझते हुए 'स्त्री जीवन विकास परिषद' का 1953 में आयोजन किया गया तथा डॉक्टर्स को एकत्र कर परिचर्चा भी आयोजित की गई। योगासन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण होगा, इस विचार को करते हुए समिति के शिक्षा वर्ग में योगासन का समावेश किया गया है । एक आदर्श सेविका कैसी हो? इस बात पर भी लगातार चिंतन-मनन कर स्पष्ट रूपरेखा तैयार की गई। समिति शाखा स्थान पर अनुशासित होकर व्यायाम, योग, दंड, छुरिका, नियुद्ध आदि की शिक्षा दी जाने लगी। खेलों का समावेश भी राष्ट्र सेविका समिति की शाखाओं में किया जाने लगा क्योंकि खेलों के माध्यम से बहनों से आध्यात्मिक मन, शौर्य, साहस, धैर्य, देशभक्ति का निर्माण होगा। सुदृढ़ शरीर में तेजस्वी मन का निर्माण होता है इसलिए बौद्धिक विकास के विभिन्न कार्यक्रम भी शाखाओं में करवाए जाते हैं ताकि समिति की सेविकाओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास, धर्म और अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त हो सके।

आज अगर संसद से सड़क तक में मातृशक्ति की गूंज है तो उसमें भी कहीं ना कहीं लक्ष्मीबाई केलकर के विचारों को ही प्रधानता मिली है। उन्होंने 1936 में जिस मातृशक्ति के विषय में सोचा था, आज संसद भवन में भी उस मातृशक्ति की उपस्थिति प्रत्येक भारतीय के मन में प्रेरणा का संचार करती है। भारतीय महिलाओं के समक्ष माता सीता, मदालसा, गार्गी, मैत्री, लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होलकर, माता जीजाबाई , पद्मावती, विद्यावती (भगत सिंह की माता जी) आदि कई महिलाओं का उदाहरण है कि महिला शक्ति अगर कुछ मन में ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं है।

राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका और प्रमुख संचालिका श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर ने महिलाओं में छिपी शक्तियों को उस समय पहचाना जब नारी सशक्तिकरण की बात से कोई परिचित भी नहीं था। 25 अक्टूबर, 1936 विजयदशमी के दिन महिलाओं के एक ऐसे संगठन की नींव रखी गई जो व्यक्ति निर्माण के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी योगदान दे। आद्य संस्थापिका व प्रमुख संचालिका लक्ष्मीबाई केलकर की मृत्यु पश्चात 1978 में समिति की बागडोर सरस्वती ताई आप्टे ने संभाली। वर्ष 1994 में ऊषा ताई चाटी ने तृतीय प्रमुख संचालिका का दायित्व संभाला। चतुर्थ प्रमुख संचालिका प्रमिल ताई रहीं और वर्तमान में माननीय शांतक्का समिति की प्रमुख संचालिका हैं। इन सभी प्रातः स्मरणीय प्रमुख संचालिकाओं के नेतृत्व में समिति का कार्य देश और विश्व के कई देशों में पहुंचा है । आज देशभर में लगभग 3 लाख समिति की सेविकाएं राष्ट्रभाव लिए समिति कार्य के लिए कृत संकल्पित हैं।

भारत के 2380 शहरों, कस्बों और गांवों में समिति की 3000 शाखाएं चल रही हैं। समिति के 1000 सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। दुनिया के 16 देशों में समिति की सशक्त उपस्थिति दर्ज हो चुकी है।

राष्ट्र सेविका समिति सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक धरातल पर 1936 से काम कर रही है। शाखाओं के माध्यम से समिति की सेविकाएं (सदस्या) समाज और देश के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो देश में राष्ट्रीयता व एकता के भाव के प्रचार प्रसार में राष्ट्र सेविका समिति की सेविकाएं एकजुट होकर कार्य कर रही हैं। ■

महिला आरक्षण से समाज में परिवर्तन आएगा

डॉ. ऋतु सारस्वत
समाजशास्त्री

नारी शक्ति वंदन अधिनियम का लाया जाना एक बहुत ही सकारात्मक कदम है। यह भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव में एक अहम भूमिका निभाएगा। राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जो किसी को भी नेतृत्व की क्षमता देने के साथ-साथ निर्णय देने की क्षमता भी प्रदान करता है। महिलाओं के विकास में अभी सबसे बड़ी बाधा यही है कि उनके पास निर्णय लेने की क्षमता नहीं है। इस बदलाव की अपेक्षा बहुत पहले से की जा रही थी। देर से ही सही मगर प्रथम पड़ाव तो पूरा हुआ है।

जब तक पंचायती राज में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू नहीं हुआ था, तब तक यह कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि महिलाएं राजनीति मैं प्रवेश कर सकती हैं। पुरुष सत्तात्मक समाज के लिए यह एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा था, क्योंकि महिलाओं को राजनीति के लिए पूर्णतः अक्षम माना जाता रहा है। यह धारणा तब गलत सिद्ध हो गयी जब महिलाओं को पंचायती राज चुनावों में आरक्षण मिला और महिलाओं ने अपनी क्षमता सिद्ध की। यद्यपि सामाजिक परिवर्तन एक द्रुत गति से होने वाली प्रक्रिया नहीं है। समाजशास्त्री के नाते से मैं यह बात बहुत विश्वास से कह सकती हूं कि अभी भी प्रधान पद पर आसीन लगभग 70 प्रतिशत से ज्यादा महिलाओं के निर्णय में उनके पति, पिता या भाई जैसे घर के पुरुष सदस्यों की भूमिका अहम होती है। लेकिन, यदि ऐसी 20–30 प्रतिशत महिलाएं भी हैं जो स्वयं निर्णय लेती हैं, तो भविष्य सुखद है क्योंकि आनेवाले समय में यह प्रतिशत और बढ़ेगा।

इसी प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी देखा जाए तो महिला आरक्षण को लेकर एक नकारात्मक दृष्टिकोण उभरेगा, क्योंकि यह माना जाता है कि महिलाएं नेतृत्व करने के लिए नहीं बनी हैं। दुनिया भर में हुए शोध बताते हैं कि महिलाओं ने जहां भी निर्णय करने का अधिकार लिया है, वहां एक समावेशी और निरंतर विकास हुआ है और उसका मानवाधिकार का पक्ष भी पुरुषों की अपेक्षा अधिक गहरा रहा है। हिलेरी क्लिंटन ने अपनी एक किताब में महिला नेतृत्व के बारे में बहुत विस्तार से चर्चा की है कि महिलाओं का नेतृत्व करना ना तो पहले सामान्य था और ना ही आज सामान्य है। वर्ष 2020–21 में सत्ता में

इसमें किंचित भी संदेह नहीं कि 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' भारतीय महिलाओं को अविश्वसनीय रूप से सशक्त करेगा क्योंकि सत्ता में प्रत्यक्ष भूमिका न केवल उनकी निर्णायक क्षमता को विकसित करेगी अपितु उन्हें यह अवसर भी देगी कि वह देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में अपनी भूमिका निभा सकें।

पदों के लिए उपयुक्तता के बारे में जी-7 के सदस्य देशों के 20 हजार वयस्कों पर एक अध्ययन किया गया था। इसमें यह बात ये सामने आयी थी कि उन देशों में भी अधिकतर लोगों ने माना कि महिलाएं नेतृत्व के उपयुक्त नहीं हैं। सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि युवा प्रतिभागियों का भी मानना था कि राजनीति महिलाओं का कार्यक्षेत्र नहीं है।

दरअसल राजनीति एक ऐसा क्षेत्राधिकार है जहां से हम सबको संचालित कर सकते हैं। इसकी कमान कोई आसानी से महिलाओं को सौंपना नहीं चाहता है। ऐसे में जब आरक्षण के द्वारा सत्ता संचालन की ताकत उनमें आएगी तो महिलाओं को दृढ़ता से उन सारे दुर्व्यवहारों का सामना भी करना पड़ेगा, जो शारीरिक से अधिक उन्हें मानसिक तौर पर प्रताड़ित करेगा और उन्हें पीछे धकेलने का काम करेगा। यूरोप में एक अध्ययन में हिस्सा लेने वाली बहुत सारी महिला सांसदों ने कहा था कि उन्हें अपने कार्यकाल के दौरान मानसिक हिंसा का सामना करना पड़ा था। यह मानकर चलना ही होगा कि समानता के तमाम दावों के बावजूद भागीदारी की बात सामने आने पर हमारी मानसिकता बहुत संकुचित हो जाती है। हम सहजता से वह रास्ते देने को तैयार नहीं होते हैं।

शुरुआत में किसी भी परिवर्तन को स्वीकार करने में बहुत समय लगता है और परेशानी होती है। लेकिन धीरे-धीरे वह परिवर्तन जब वैधानिक और कानूनी बाध्यता के कारण लागू कर दिया जाता है तो समाज उसके साथ अपना मानसिक सामंजस्य बैठाने के लिए विवश हो जाता है और धीरे-धीरे वह उसकी आदत का हिस्सा बन जाता है। जैसे, पहले महिला सरपंचों के प्रति एक अजीब तरह का विरोधात्मक व्यवहार हुआ करता था। पंचायती राज की व्यवस्था 1973 में लागू हुई थी और तब से एक लंबा समय निकल चुका है। इस लंबे समय में लोग पंचायती स्तर की राजनीति में महिला सरपंचों के साथ बातचीत करने और उनके नेतृत्व में कार्य करने के आदी हो चुके हैं। पंचायती स्तर पर महिलाओं के नेतृत्व की स्वीकारोक्ति तैयार होने में समय लगा है, तो संसदीय राजनीति मे महिलाओं के नेतृत्व से स्वीकार करने में भी समय लगेगा। लेकिन यह आने वाले दो-तीन दशकों में समाज में एक जबरदस्त परिवर्तन लेकर आएगा।

एक प्रश्न आरक्षण को लेकर भी उठेगा कि क्या भागीदारी सुनिश्चित करने का यही एकमात्र समाधान है। मुझे लगता है कि ऐसी ही परिस्थिति में आरक्षण बहुत जरूरी था। भारत ही नहीं, और भी कई देशों में आरक्षण दिये गये हैं। बिना आरक्षण के ना तो विकसित और ना ही विकासशील देशों में महिलाओं को राजनीति में उनकी न्यायोचित भागीदारी दिया जाना संभव है। भारत में ही यदि पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण नहीं दिया जाता, तो क्या महिलाओं का सरपंच बन पाना संभव था।

(बातचीत पर आधारित, ये लेखिका के निजी विचार हैं) ■

संसद का विशेष सत्र : उत्पादकता और उपलब्धि

डॉ. अखिलेश प्रताप सिंह
प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय लोकतांत्रिक परंपरा में हमारी संसद का महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक सुधार, आर्थिक विकास, लोक कल्याण और राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर हमारे संसद ने पिछले 75 वर्षों में अनेक ऐसे विधान और नियम पारित किया जिन्होंने भारत राष्ट्र को नई दिशा दी है। चाहे आजादी के बाद भूमि सुधार का विषय हो चाहे, राष्ट्रीयकरण के माध्यम से आम सेवाओं को नागरिकों तक पहुंचाने की बात हो, चाहे बदलते वैश्विक परिदृश्य में नई आर्थिक सुधारों को दिशा देने की बात करें, भारत को एक आण्विक शक्ति बनाने का प्रश्न हो या फिर नए भारत और नए लक्ष्य को निर्धारित करने का प्रश्न हमारी संसद ने हमेशा ही इन विषयों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस आलोक में यदि हम हाल में हुए संसद के विशेष सत्र को देखें तो उत्पादकता और उपलब्धि के मानक पर यह सत्र बहुत ही ऐतिहासिक माना जाएगा।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 नए संसद भवन में पारित होने वाला पहला कानून बन गया। संसद का चार दिवसीय विशेष सत्र, जिसमें ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक पारित हुआ, समय के उपयोग और लंबी बहस के मामले में हाल के दिनों में सबसे अधिक उत्पादक सत्रों में से एक बन गया है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, जिन्होंने गुरुवार आधी रात को सदन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया, ने घोषणा की कि निचले सदन के सत्र की उत्पादकता 132 प्रतिशत रही, जबकि कार्यवाही 31 घंटे तक चली। बिरला ने टिप्पणी की, 'यह सत्र संसदीय इतिहास में एक ऐतिहासिक सत्र के रूप में दर्ज किया जाएगा, क्योंकि इस सत्र के दौरान संसद ने अपनी नई इमारत से अपनी यात्रा शुरू की। सोमवार (18 सितंबर) को, छोटे लेकिन प्रभावशाली सत्र के पहले दिन, दोनों सदनों - लोकसभा और राज्यसभा - के सांसदों ने संसद की पुरानी इमारत में संसद की 75 साल की यात्रा पर चर्चा की। बिरला ने कहा कि चर्चा 6 घंटे 43 मिनट तक चली, जिसमें 36 सदस्यों ने भाग लिया। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के अनुसार, राज्यसभा में इस मुद्दे पर 6 घंटे और 42 मिनट तक चर्चा हुई और बहस में 34 सांसदों ने भाग लिया। अगले दिन, पुराने भवन के सेंट्रल हहल में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अन्य सांसद उसी परिसर में थोड़ी दूरी पर स्थित नए संसद भवन की ओर चल पड़े।

पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के अनुसार, विशेष सत्र में, जो शुरू में 18 से 22 सितंबर तक निर्धारित किया गया था, राज्यसभा की उत्पादकता 128 प्रतिशत थी। यह विशेष सत्र इस मामले में भी उपयोगी रहा कि उसने बढ़ते भारत की सक्षम और सफल 'मून मिशन' और उसके वैज्ञानिक शक्ति का भी अभिनंदन किया। उच्च सदन में भारत के सफल चंद्र मिशन चंद्रयान-3 पर चर्चा हुई। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा शुरू की गई, चंद्रयान -3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग द्वारा चिह्नित भारत की गौरवशाली अंतरिक्ष यात्रा पर चर्चा 87 सदस्यों की भागीदारी के साथ 12 घंटे और 25 मिनट तक चली। लोकसभा में चंद्रयान-3 की सफलता पर 6 घंटे 43 मिनट तक चर्चा हुई और 30 सांसदों ने इसमें हिस्सा लिया। मंगलवार को नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 या महिला आरक्षण बिल लोकसभा में पेश किया गया। लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का लक्ष्य रखने वाला विधेयक बुधवार को लोकसभा में और गुरुवार को राज्यसभा में पारित हो गया - जो नए संसद भवन में पारित होने वाला पहला कानून बन गया। एक पदाधिकारी ने कहा कि उच्च सदन ने ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक पर 12 घंटे से अधिक समय बिताया, जिससे यह पिछले कई वर्षों में किसी कानून पर सबसे लंबी बहस में से एक बन गया। राज्यसभा में ऐतिहासिक बहस में 68 सदस्यों या कुल सांसदों में से 26 प्रतिशत से अधिक ने भाग लिया, जिसके कारण महिला आरक्षण विधेयक पारित हुआ।

इस कैलेंडर वर्ष में पिछले दो सत्र - बजट और मानसून - में दोनों सदनों ने व्यवधानों और स्थगनों के बीच आंशिक रूप से कार्य किया। बजट सत्र में, लोकसभा और राज्यसभा अपने आवंटित समय का क्रमशः 33 प्रतिशत और 24 प्रतिशत ही उपयोग कर सकीं, जबकि मानसून सत्र में यह आंकड़ा मामूली सुधार हुआ और क्रमशः 43 प्रतिशत और 55 प्रतिशत रहा। "सत्र की उपस्थिति और कामकाज प्रभावशाली था। मुझे सांसदों को बधाई देनी है, लेकिन इस सत्र के एजेंडे को पूरा श्रेय भी देना है," लोकसभा के पूर्व महासचिव पी. श्रीधरन ने कहा। 'महिला आरक्षण विधेयक सभी राजनीतिक दलों के लिए एक संवेदनशील मुद्दा है और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि विधेयक के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क रखने के लिए चर्चा हो।' उन्होंने कहा, इससे यह भी पता चलता है कि यदि सदन का एजेंडा महत्वपूर्ण है तो विधायक भाग लेने के लिए उत्सुक होंगे। समकालीन भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में यह विशेष सत्र अपने कम समय परंतु अपने अधिक कामकाज के लिए हमेशा जाना जाएगा। इसके लिए भारतीय संसद के पदाधिकारी लोकसभा स्पीकर और वर्तमान सरकार और उसका नेतृत्व बधाई के पात्र है। ■

एक देश, एक चुनाव
चुनावी चक्रव्यूह से मुक्ति का परिप्रेक्ष्य

मोनिका चौहान
शिक्षिका

वर्तमान चुनावी प्रक्रिया में संशोधन कर एक नई चुनाव व्यवस्था का निर्माण करने से संबंधित चर्चा पूरे देश में हो रही है। केंद्र सरकार ने 'एक देश एक चुनाव' को लेकर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। यह समिति 'एक देश एक चुनाव' के सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श करेगी।

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोकतंत्र में जनता अपनी इच्छाएं और अपेक्षाएं व्यक्त करती है। जनप्रतिनिधि को चुनने की यह रीति इस देश में पिछले 7 दशकों से चली आ रही है। इस पद्धति में अनेक खामियां हैं। इन खामियों को दूर कर एक नई चुनावी व्यवस्था का संचालन और निर्माण करने का प्रयास 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के माध्यम से हो सकता है। वार्षिक चुनावों के चलते देश लगातार चुनावी माहौल में रहता है, जिससे विकास और प्रगति में बाधा आती है। 'एक देश, एक चुनाव' की अवधारणा इस समस्या का समाधान कर सकती है, जिसमें एक समय में सभी स्तर के चुनाव हों।

पिछले 7 दशकों में चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी निष्पक्ष और सुचारू बनाने हेतु अनेक प्रयास और संशोधन हुए हैं। भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, अपनी चुनावी प्रक्रिया के लिए प्रसिद्ध है। हर वर्ष भारत में किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं, जिससे चुनावी व्यवस्था पर हमेशा दबाव बना रहता है। 'एक देश, एक चुनाव' यह एक ऐसा प्रयास है जो इस दबाव को कम कर सकता है। यह प्रस्ताव इस बात पर आधारित है कि भारत में सभी चुनाव - चाहे वह संघीय, राज्य, या स्थानीय स्तर के हों एक ही समय पर हों। अर्थात् यह सभी चुनाव 5 साल में एक बार ही होंगे या यूं कहें भारत को मध्यावधि चुनाव और हमेशा होने वाले चुनावों से मुक्त करना है। इसी विचार का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल के राजनीतिक दल समर्थन कर रहे हैं।

आजादी के बाद के पहले कुछ दशकों में (1952, 1957, 1962 व 1967) भारत में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होते थे। इसका मुख्य कारण था संघीय संरचना में स्थिरता और सामाजिक-राजनीतिक संविधान की अवबोधना। 1968–69 में इस समानांतरता का विच्छेद हो गया, जिससे चुनावी क्रम में विसंगतियाँ आने लगीं। कुछ राज्यों में विधानसभाओं को वक्त से पहले भंग किया गया और 1971 में लोकसभा के चुनाव को भी अग्रसार किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व में भी दोनों चुनावों को एक समय करने के प्रयत्न किये हैं, लेकिन सफल नहीं हुए। 1983 में चुनाव आयोग ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में ऐसी संभावना का उल्लेख किया। इसके बाद 1999

में विधि आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इस पर टिप्पणी की। 2003 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से इस विषय पर संवाद साझा किया, परन्तु सहमति नहीं बन सकी। फिर, लालकृष्ण आडवाणी ने 2010 में इंटरनेट के माध्यम से बताया कि उन्होंने डॉ.मनमोहन सिंह (तत्कालीन प्रधानमंत्री) और तत्कालीन वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी से दोनों चुनावों को एक साथ कराने और कार्यकाल को स्थिर बनाने की मांग की थी। 2014 में भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में इसे समर्थन प्रदान किया, जिससे इस विषय पर विवाद उत्पन्न हो गया। 2016 में मोदी ने 'एक देश, एक चुनाव' की ओर ध्यान केंद्रित किया, जिस पर नीति आयोग ने त्वरित रूप से रिपोर्ट प्रस्तुत की। अन्ततः 2019 में विधि आयोग ने इस तरह की व्यवस्था की अनुमति के लिए पांच संविधान संशोधन की आवश्यकता की सूचना दी। लगातार इस विषय पर अब तक चर्चा और टिप्पणी हो रही है लेकिन कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया है।

यदि हम देशव्यापी चुनावी घटनाक्रमों की समीक्षा कर चुनावी प्रकिया का मूल्यांकन करें तो पता चलता है कि प्रत्येक वर्ष किसी न किसी राज्य में विधानसभा चुनाव होते हैं। इससे देश की आर्थिक स्थिति पर बहुत ज्यादा असर पड़ता है। इस चुनावी प्रक्रिया की अविरलता का परिणाम यह है कि राष्ट्र सदैव चुनावी परिप्रेक्ष्य में रहता है, जिससे प्रशासनिक और नीतिपरक निर्णयों पर प्रभाव पड़ता है तथा राष्ट्रीय कोष पर अत्यधिक भार रहता है। इसे दूर करने के लिए नीतिज्ञों ने सभी विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव को एक समय पर आयोजित करने का सुझाव दिया है। हाल ही में 17वीं लोकसभा चुनाव में अनुमानित 60 हजार करोड़ रूपये का व्यय हुआ और पूरे देश में करीब 3 महीने तक चुनावी माहौल देखने को मिला। इसी प्रकार का माहौल वर्ष में अन्य राज्यों में भी देखा जा सकता है। 'एक देश एक चुनाव' की सोच इस अविरत चुनावी चक्र से मुक्ति प्रदान कर सकती है।

बार-बार होने वाले चुनावों के कारण आदर्श आचार संहिता अक्सर लागू होती है, जिससे नीतिगत निर्णय और योजनाएं अवसादित हो जाती हैं। एक समय में चुनाव होने पर इस प्रकार की अवरोधना कम होगी। एक समय में सभी चुनाव होने से सरकारी खजाने पर अधिक बोझ नहीं पड़ेगा, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। एक ही समय पर होने वाले चुनाव में प्रचार-प्रसार, चुनावी स्थलों की व्यवस्था और अन्य चुनावी जरूरतों पर होने वाले खर्च में बचत हो सकती है। अवशिष्ट धनराशि को राष्ट्रनिर्माण में संचारित किया जा सकता है। राजनीतिक दलों के वित्तीय व्यय पर निगरानी आसानी से की

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोकतंत्र में जनता अपनी इच्छाएं और अपेक्षाएं व्यक्त करती है। जनप्रतिनिधि को चुनने की यह रीति इस देश में पिछले 7 दशकों से चली आ रही है। इस पद्धति में अनेक खामियां हैं इन खामियों को दूर कर एक नई चुनावी व्यवस्था का संचालन और निर्माण करने का प्रयास 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के माध्यम से हो सकता है।

जा सकेगी। जब मतदान प्रक्रिया पाँच वर्षीय अन्तराल पर होगी है तो निर्वाचन आयोग, अर्धसैनिक बलों और जनता को पूर्व तैयारी के लिए प्रचुर कालावधि मिलेगी, जिससे चुनावी प्रक्रिया और अधिक स्वच्छ और पारदर्शी होगी। प्रशासनिक कर्मचारियों, पुलिस बल, और अन्य संबद्ध सेवाओं की जरूरत कम होंगी, जिससे उन्हें अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। बार-बार चुनावी ड्यूटी पर नहीं लगाने से उनका काम में बाधा नहीं होगी, और वे अपने मुख्य कर्तव्यों में ज्यादा समय दे सकेंगे। लगातार चुनावों की वजह से काले धन और भ्रष्टाचार में वृद्धि होती है। एक ही समय में चुनाव होने पर इस पर नियंत्रण हो सकता है। चुनावी पेटी, ईवीएम मशीनें और अन्य औजारों की जरूरत एक ही समय पर एकत्रित की जा सकती है, जिससे उनका पुनः प्रयोग और अधिकतम उपयोग सुनिश्चित होगा। राजनितिक दल साल में कई बार जनता को लोक लुभावन वाली नीति में फंसाकर उनका फायदा उठाते हैं, इस आर्थिक प्रलोभन में जनता साल में कई बार फंसती है। एक राष्ट्र एक चुनाव में जनता भी चुनावी दलों से दूर होकर अपने अपने परिवार, राष्ट्रीय, समाज के हित के बारे में सोच कर खुद को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम बढ़ायेगी। जब सभी चुनाव एक ही समय पर होते हैं तो इससे निरंतर चुनावी प्रक्रिया और तैयारी में लगने वाला समय भी बचता है। चुनावों की वजह से बार-बार होने वाली जीवन में असुविधा कम होगी।

कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि बढ़ती जनसंख्या के कारण एक साथ चुनाव आयोजित करना कठिन है जबकि कुछ लोग मानते हैं कि तकनीकी विकास के कारण ऐसा संभव है। इस देश में सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक विविधता में यह प्रस्ताव विचारणीय है। इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों का तर्क है कि इससे राजनीतिक शक्ति केंद्रित होगी और केंद्र तथा राज्य में सिर्फ एक राजनीतिक पार्टी शासन करेगी। इस प्रक्रिया में संवैधानिक चुनौतियाँ होंगी, जिसमें संविधान में परिवर्तन जरूरी हो सकता है। इस योजना का प्रभाव प्रादेशिक और नए छोटी पार्टियों पर नकारात्मक होगा। राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी पार्टियों की प्रभुता बढ़ जाएगी, जिससे छोटी पार्टियाँ मुकाबले में पीछे रह सकती हैं। 'एक देश, एक व्यक्ति, एक विचार' के अनुसार सिर्फ एक पार्टी बाकी रहेगी। लेकिन, एक ही राष्ट्रीय विचार से जनता का अज्ञानी और अनभिज्ञ होना भी इसका हिस्सा है। इससे राजनीतिक तानाशाही की स्थापना हो सकती है, जो भारतीय लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।

इस सोच की प्रासंगिकता को समझने के लिए हमें इसके लाभ-हानि का अध्ययन करना चाहिए। इस नई प्रक्रिया के बारे में लोगों के विचारों को जानना चाहिए। 'एक देश, एक चुनाव' की अवधारणा को अमल में लाने के लिए व्यापक चर्चा की आवश्यकता है। यह सिर्फ चुनावी प्रक्रिया को ही नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र को मजबूती और स्थिरता भी प्रदान कर सकता है। ■

भारत से ही 'स्व' का आत्मबोध होगा

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत जी ने हाल ही में गुवाहटी में एक कार्यक्रम में कहा था कि लोगों को इंडिया के बजाय भारत नाम का प्रयोग शुरू करना चाहिए। भारत के संविधान के प्रथम अनुच्छेद में भी लिखा है, 'इंडिया जो कि भारत है, राज्यों का एक संघ होगा।' भारतीय जनता पार्टी इंडिया का नाम बदलकर भारत करने की मांग करती रही है। भाजपा सांसद नरेश बंसल ने राज्यसभा में मानसून सत्र के दौरान कहा था कि इंडिया शब्द दासता का प्रतीक है, इसे संविधान से हटा देना चाहिए।

भारत बनाम इंडिया विषय पर संपूर्ण देश में बहस चल रही है। जी 20 शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा रात्रि भोज के लिए भेजे गए आमंत्रण पत्र में 'प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसीडेंट ऑफ भारत' लिखे जाने के बाद राजनीति गरमा गई है। विपक्षी दलों ने पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा प्रदत्त गुलामी के प्रतीक इंडिया को त्यागने के प्रयास का कड़ा विरोध किया गया है। उन्होंने भाजपा पर आरोप मढ़ दिया है कि वह विपक्षी गठबंधन से घबराकर इंडिया शब्द को संविधान से हटाना चाहती है। लेकिन यहां अहम सवाल यह है कि क्या अपनी प्राचीन विरासत और जड़ों को खोजना अनुचित है? क्या विपक्षी दलों द्वारा इस मुददे पर संकीर्ण राजनीति करना उचित है? हमारे पौराणिक इतिहास एवं ग्रंथों में भारत शब्द की न केवल सार्थकता दर्ज है बल्कि देश का नाम भारत क्यों पड़ा यह भी स्पष्ट तौर पर उल्लिखित है।

भारत में भा का तात्पर्य ज्ञान रूपी प्रकाश से और रत से आशय लीन या जुटा हुआ है। यानि जो लोग इस भूमि पर खोज में लीन रहते हैं। इसके अलावा इसका दूसरा अर्थ है भरत के वंशज। विष्णु पुराण के अनुसार धरा पर जम्बू, शाल्मली, प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शाक एवं पुष्कर सात द्वीप हैं। इसमें जम्बू द्वीप सभी के बीचों-बीच स्थित है। जम्बू द्वीप के नौ खंड इलाव, भद्राश्रव, किंपुरुष, भारत, हरि केतुमाल, रम्यक, कुरु और हिमालय। उत्तर और हिमालय के दक्षिण में भारत वर्ष स्थित है।

इसके अलावा भागवत पुराण के स्कंद 5 और अध्याय 4 के श्लोक में इसका उल्लेख मिलता है। धरती के राजा महान प्रियवत थे। उनके पुत्र अग्नींध्र हुए। अग्नींध्र संपूर्ण जम्बूद्वीप के सम्राट बने। अग्नींध्र ने अपने

पुत्र नाभि को उस क्षेत्र का राजा बनाया जिसे बाद में भारत वर्ष कहा जाने लगा। नाभि के पुत्र भरत जब इस संपूर्ण क्षेत्र के सम्राट बने तो उनके नाम पर इस क्षेत्र का नाम भरत हो गया। श्रीमदभागवत में उल्लेख आता है, **'अजनाभं नामैतदवर्षभारतमिति यत आरभ्य व्यपदिशंति'** दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि ऋषभदेव स्वयंभू मनु से पांचवीं पीढ़ी के इस क्रम में हुए-स्वयंभू मनु, प्रियव्रत, अग्नींध्र, नाभि और फिर ऋषभ। राजा और ऋषि ऋषभनाथ के दो पुत्र थे-भरत और बाहुबली। बाहुबली को वैराग्य प्राप्त हुआ तो ऋषभ ने भरत को चक्रवर्ती सम्राट बनाया। भरत को वैराग्य हुआ तो वह अपने बड़े पुत्र को साम्राज्य सौंपकर जंगल चले गए।

अब इस बात की भी विवेचना कर लेते हैं कि इंडिया नाम कहां से आया? इंडिया की उत्पत्ति इंडस वैली के कारण मानी जाती है। उल्लेखनीय है कि भारत देश के रोम और यूनान से बहुत ही प्राचीनकाल से संबंध रहे हैं। यूनानी लोग भारत में शिक्षा प्राप्त करने और व्यापार करने के लिए आते थे। उनका मुख्य पड़ाव सिंधु और घाटी क्षेत्र में होता था। उस काल में सिंधु एक बहुत बड़ी नदी थी। इस नदी की 7 सहायक नदियां थीं। इसी सिंधु नदी को ग्रीक लोगों ने इंडस कहा। यह इंडस शब्द पहले इंडिका हुआ और बाद में अंग्रेजों ने इसका नाम इंडिया कर दिया। कुल मिलाकर इंडिया नाम हमें ब्रिटिश शासकों ने ही प्रदान किया, जिसे आज तक हम ढो रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत जी ने हाल ही में गुवाहटी में एक कार्यक्रम में कहा था कि लोगों को इंडिया के बजाय भारत नाम का प्रयोग शुरू करना चाहिए। भारत के संविधान के प्रथम अनुच्छेद में लिखा है, 'इंडिया जो कि भारत है, राज्यों का एक संघ होगा।' भारतीय जनता पार्टी इंडिया का नाम बदलकर भारत करने की मांग करती रही है। भाजपा सांसद नरेश बंसल ने राज्यसभा में मानसून सत्र के दौरान कहा था कि इंडिया शब्द दासता का प्रतीक है, इसे संविधान से हटा देना चाहिए।

भारत में भा का तात्पर्य ज्ञान रूपी प्रकाश से और रत से आशय लीन या जुटा हुआ है। यानि जो लोग इस भूमि पर खोज में लीन रहते हैं। इसके अलावा इसका दूसरा अर्थ है भरत के वंशज। विष्णु पुराण के अनुसार धरा पर जम्बू, शाल्मली, प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शाक एवं पुष्कर सात द्वीप हैं। इसमें जम्बू द्वीप सभी के बीचोबीच स्थित है। जम्बू द्वीप के नौ खंड इलाव, भद्राश्रव, किंपुरुष, भारत, हरि केतुमाल, रम्यक, कुरु और हिमालय। उत्तर और हिमालय के दक्षिण में भारत वर्ष स्थित है।

इसी के चलते विपक्षी दलों ने इस मुददे पर भाजपा के खिलाफ अभियान छेड़ दिया है। उनका आरोप है कि चूंकि 26 विपक्षी दलों ने वर्ष 2024 में लोकसभा चुनाव के मददेनजर एनडीए के खिलाफ हाल ही में **I.N.D.I.A.** नामक एलायंस बनाया है इसलिए एनडीए विपक्षी दलों की एकजुटता से घबराई हुई है। यही कारण है कि वह इंडिया शब्द को संविधान से भी हटाना चाहते हैं।

भारत बनाम इंडिया बहस में यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि भारत नाम की क्या सार्थकता है और वह किस तरीके से हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जबकि जो इंडिया शब्द है कैसे हमें अभी भी अंग्रेजी साम्राज्य की यादों को तरोताजा कर देता है। ऐसे में हमें उसी राह पर चलना चाहिए जिससे हमारी जड़ें विरासत और अधिक सशक्त हो। इसलिए हमें इंडिया शब्द को त्याग कर शीघ्र से शीघ्र भारत बोलना शुरू करना चाहिए। इसी से संपूर्ण देशवासियों का 'स्व' का आत्मबोध हो सकेगा। ■

कथन

वर्ष 2047 तक, हमें एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है, जो अपने गौरवशाली अतीत को आत्मसात किए हुए, आधुनिकता के हर सुनहरे पहलू को समाहित करे। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जो आत्मनिर्भर हो, ऐसा भारत जिसका युवा और नारी शक्ति समाज और राष्ट्र को दिशा देने में सबसे आगे रहें। -द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

नारी शक्ति वंदन अधिनियम के साथ नए सदन की शानदार शुरुआत हुई है। इससे महिलाओं के नेतृत्व में विकास को अभूतपूर्व गति मिलने वाली है। इसे जिस प्रकार से सभी राजनीतिक दलों का ऐतिहासिक समर्थन मिला है, वह विकसित और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की सिद्धि में मील का पत्थर साबित होगा। -नरेन्द्र मोदी, प्रधानमन्त्री

मातृशक्ति के बिना भारत न अपने परम वैभव को पा सकता है, न ही विश्व को परम वैभव पर ले जा सकता है।
- डॉ. मोहन भागवत (सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

भारत की मिट्टी तीर्थ क्षेत्र है,
इसका कण-कण वंदनीय है।
- दत्तात्रेय होसबाले (सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

'इंडिया' की जगह भारत बोलें

अशोक सिन्हा
सचिव, विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ

भारत देश को स्वतन्त्र हुए 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देश अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर देशवासियों ने स्वावलंबन, "स्व" की पहचान को बढ़ावा देने वाले प्रतीकों को प्राथमिकता देना और आत्मनिर्भरता की शपथ ली है। गुलामी के चिन्हों को हटाकर आत्मगौरव जगाया जा रहा है। ऐसे समय पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने देशवासियों का आह्वान किया है कि हमें दैनिक व्यवहार में इंडिया के स्थान पर अपने देश के प्राचीन नाम भारत का ही अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। यह आह्वान सर्वथा समीचीन और सार्थक है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संस्कृति, सभ्यता और सनातन धर्म की अत्यधिक उपेक्षा हुई है। संविधान निर्माण के समय इस देश का एक ही नाम रखा जाय, इस पर बहुत बहस हुई थी। अधिकांश की राय थी की भगवान् ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर (स्कन्द पुराण, अध्याय 37) इस देश का नाम भारत पड़ा, अतः संविधान में देश का नाम भारत ही रखा जाय। इस बात का समर्थन करने वाले सेठ गोविन्द दास, कमलापति त्रिपाठी, कल्लूर सुब्बा राव, राम सहाय और हरगोविंद पन्त प्रमुख सदस्य थे। बाबा भीमराव आम्बेडकर जी ने भी बहुत अच्छी बहस की। इस अवसर पर सभा को अवगत कराया गया कि इंडिया नाम कोई बहुत पुराना नाम नहीं है। वेदों में तथा पुराणों में कहीं इसका जिक्र नहीं है। इसका प्रयोग यूनानियों, और अंग्रेजों ने देश की पहचान धूमिल करने हेतु प्रारम्भ किया था। इसमें भारत की आत्मा नहीं झलकती है। परन्तु अनेक तर्कों के बाद भी संविधान के अनुक्षेद एक में इंडिया दैट इज भारत लिखा गया। यह नामकरण निहित दृष्टिकोण से किया गया। अब भारत के स्वतन्त्र हुए 75 वर्षों का कालखंड बीत गया है और आज भी कुछ लोग भारत जैसे प्राचीन नाम के स्थान पर इंडिया नाम को अधिक प्रयोग करते हुए अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहें हैं। ऐसे लोग भूल जातें हैं की यह युग भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल है। हम गुलामी के हर चिन्ह को मिटाना चाहते हैं।

व्याकरण के अनुसार विशिष्ट नाम (प्रॉपर नाउन) का अनुवाद नहीं होता है। जैसे किसी व्यक्ति का नाम हजारा सिंह हो तो उसे इंग्लिश में थाउजेंडा सिंह नहीं कहेंगे, क्योंकि यह उसका विशिष्ट नाम है। उसे अंग्रेजी भाषा में भी Hajara Singh ही लिखा जायेगा। इसी प्रकार धर्म को भी अंग्रेजी भाषा में Dharma ही लिखा जाता है। देश के नाम में यही सूत्र काम करता है। अमेरिका को अंग्रेजी में भी America ही कहते हैं। जापान को अंग्रेजी में भी Japan ही कहते हैं। भूटान को अंग्रेजी में भी Bhutan ही कहते हैं। श्रीलंका को अंग्रेजी में भी Sri Lanka ही कहते हैं, बांग्लादेश को अंग्रेजी में भी Bangladesh ही कहते और बोलते है। नेपाल को अंग्रेजी में भी Nepal ही कहते हैं, पाकिस्तान को अंग्रेजी में भी Pakistan ही कहते हैं। फिर भारत को अंग्रेजी में India क्यों कहते हैं? आक्सफोर्ड डिक्सनरी के पृष्ठ नं० 789 पर लिखा है Indian जिसका मतलब ये बताया है old-fashioned - criminal peoples अर्थात् पिछड़े और घिसे-पिटे विचारों वाले अपराधी लोग। अतः इण्डिया (India) का अर्थ हुआ असभ्य और अपराधी लोगों का देश। भारत माता तथा भारतीयों का अपमान करने के लिए विदेशियों ने भारत को इंडिया नाम रखा था। इससे देश में भ्रम उत्पन्न हुआ और हम स्व से दूर होते गए। फलतः भारत के तीन नाम प्रचालन में आ गए 1- भारत 2- हिंदुस्तान 3—इंडिया ।

भारत नाम की प्राचीनता के कई प्रमाण प्राचीन ग्रंथो में उपलब्ध है। विष्णु पुराण में वर्णन आया है :-

उत्तरम् यत् समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्

वर्षं तद् भारतम् नाम, भारती यत्र संततिः॥
– विष्णु पुराण २.३.१

अर्थात् समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है उसका नाम 'भारत' है और उसकी संतानें यानी उसके निवासी 'भारतीय' कहे जाते हैं।

विष्णु पुराण के दूसरे खंड के तीसरे अध्याय के 24वें श्लोक के अनुसार–

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषा सुरत्वात्॥

अर्थ है– देवता हमेशा से यही गान करते हैं कि, जिन्होंने स्वर्ग और अपवर्ग के बीच में बसे भारत में जन्म लिया, वो मानव हम देवताओं से भी अधिक धन्य हैं।

महाभारत के आदिपर्व में दूसरे अध्याय के श्लोक 96 के अनुसार –

शकुन्तलायां दुष्यन्ताद् भरतश्चापि जज्ञिवान
यस्य लोकेषु नाम्नेदं प्रथितं भारतं कुलम्

अर्थ है– राजा दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम से यह भरतवंश संसार में प्रसिद्ध हुआ। दुष्यंत और शकुंलता की प्राचीन प्रेम कहानी बहुत प्रचलित है। राजा दुष्यंत और शकुंतला के बेटे के नाम भरत पर ही देश का नाम भारत पड़ा।

भागवत पुराण के अध्याय 4 में एक श्लोक के अनुसार–

येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीद् येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति

अर्थ है कि– भगवान ऋषभ को अपनी कर्मभूमि अजनाभवर्ष में 100 पुत्र प्राप्त हुए थे, जिनमें उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र महायोगी भरत को अपना राज्य दिया। कहा जाता है कि इन्हीं के नाम से देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

इसके साथ ही अन्य पुराण जैसे स्कंद पुराण, ब्रह्मांड पुराण, अग्नि पुराण और मार्कंडेय पुराण आदि में भी भारत नाम का उल्लेख मिलता है। यही कारण है कि, आज भी जब हिंदू धर्म में कोई भी पूजा या अनुष्ठान होते हैं तो इसकी शुरुआत में जब संकल्प लिया जाता है तो इसमें भारत के कई प्राचीन नामों का उच्चारण किया जाता है। जैसे जम्बू द्वीपे भारत खंडे आर्यावर्ते आदि, लेकिन इन नामों में इंडिया का जिक्र नहीं आता है। हम भारत माता की जय का उद्घोष बड़े गर्व से करते है। यह नारा स्वतंत्रता संग्राम का नारा है। गाँधी जी ने भारत छोड़ो का नारा दिया था। हौसला बढ़ने वाले शब्द मन को मजबूत करते हैं।

संविधान का पहला अनुच्छेद इन शब्दों के साथ शुरू होता है – इंडिया, दैट इज भारत..। इसे भारत दैट इज इंडिया भी लिखा जा सकता है। राष्ट्रगान में भारत भाग्य विधाता शब्द प्रमुखता से आता है। भारत संचार निगम लिमिटेड, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, भारत पेट्रोलियम जैसे दर्जनों उदाहरण हैं। ऐसा नहीं है कि भारत शब्द अचानक ही देश की चेतना में लाया जा रहा हो। भुवनेश्वर, ओडिशा की हाथीगुम्फा के अभिलेखों में इसके पहले प्रमाण मिलते हैं। कलिंग के राजा खारवेल (50 ई.पू.) के साम्राज्य का वर्णन करते हुए यह अभिलेख कहता है कि अपने शासनकाल के दसवें वर्ष में उन्होंने भारतवर्ष की विजय का अभियान छेड़ा। भारत या भारतवर्ष शब्द से भारतीयों का गहरा भावनात्मक लगाव है और कोई भी इसे ठेस नहीं पहुंचाना चाहेगा। खुद पं. नेहरू ने 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है कि भारत माता का मतलब है उसके लोग और उसकी जीत का मतलब है उसके लोगों की जीत। भारत बनाम इंडिया पर देशव्यापी बहस पैदा होने के बाद अमिताभ बच्चन और वीरेंद्र सहवाग ने भारत नाम के पक्ष में टिप्पणियां कीं। अक्षय कुमार ने अपनी आगामी फिल्म की टैगलाइन बदल ली। लॉजिस्टिक कंपनी ब्लू डार्ट ने बड़ा एलान किया है। कंपनी ने अब अपनी प्रीमियम सेवा डार्ट प्लस का नाम बदलकर भारत प्लस कर दिया है। ब्लू डार्ट कंपनी ने अपने फैसले की वजह बताते हुए कहा, 'यह कदम हमारे उपभोक्ताओं की लगातार विकसित होती जरूरतों के साथ कदमताल करने की प्रक्रिया के लिए लक्षित है।' कंपनी ने कहा कि वह सभी हितधारकों को इस बदलाव वाली यात्रा से जुड़ने का न्योता देती है, जिससे हम भारत को पूरी दुनिया और दुनिया को भारत से जोड़ना जारी रख रहे हैं। प्रधानमंत्री इंडोनेशिया यात्रा पर गए तो अधिकृत घोषणा की गई कि भारत के प्राइम-मिनिस्टर आसियान समिट में शामिल होने जा रहे हैं!

भारत की प्राचीनता को ध्यान में रखते हुए भारत के सर्वोच्य न्यायालय में इस देश का नाम केवल भारत रखने के लिए एक वाद भी दायर किया गया था, जिसको एस. ऐ . बोबडे की अध्यक्षता में तीन जजों की खंड पीठ ने निरस्त कर दिया था। तर्क यह दिया गया था कि संविधान के अनुसार दोनों ही नाम प्रयोग किया जा सकता है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने जी-20 सम्मलेन के निमित्त जब रात्रिभोज के आयोजन पर भेजे गए निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा तब विपक्ष के दलों ने हंगामा खड़ा किया कि देश का नाम बदलने का प्रयास हो रहा है। मोदी I.N.D.I.A. नामक विपक्षी गठबंधन को घृणा करते हैं और उसे तोड़ना चाहतें है। नरेंद्र मोदी ने इसकी परवाह न करते हुए समेलन में भारत के प्रधानमंत्री का खूब प्रयोग किया और नाम पट्टिका भी लगाई। पूरे विश्व में सन्देश गया कि भारत अपने पुराने नाम भारत से ही विश्व में पुकारा जाना पसंद करता है। देश के निवासियों में इस कारण गर्व की अनुभूति हुई और एक नवचेतना का संचार हुआ। आज आवश्यकता इस बात की है कि जनभावना और भारत के "स्व" का पुनर्जागरण करने हेतु हम भारत के लोग इंडिया के स्थान पर आज से केवल भारत नाम का ही प्रयोग करें तथा राजनीतिज्ञों को विवश करें की समय और सामर्थ्य आने पर जनभावना के अनुसार संविधान में संशोधन कर के देश का एक ही नाम भारत करें। ■

विश्व गगन पर भारत गान

डॉ. तुलसी भारद्वाज
शिक्षाविद एवं
'नमो' सामाजिक संस्थान की संस्थापिका

भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित सबसे बड़े वैश्विक संगठन जी-20 के शिखर सम्मेलन के घोषणा पत्र पर सभी देशों की एकमत से हुई आम सहमति ने भारत के पक्ष में तेजी से बदलते वैश्विक-परिदृश्य के समीकरणों पर मुहर लगा दी है। दिल्ली घोषणापत्र का महत्त्व इसी से समझा जा सकता है कि जी-20 में सम्मिलित राष्ट्रों की वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी करीब 80 प्रतिशत हैं और ये विश्व की करीब दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व है। इसमें सर्वसम्मत घोषणापत्र को अपनाया गया जिसमें वैश्विक शक्तियों ने एक सुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वैश्विक विश्वास की कमी को खत्म करने के आह्वान को बल दिया साथ ही संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों, सिद्धांतों के अनुरूप ही शांति की दिशा में सभी राष्ट्रों ने अन्य राष्ट्रों की क्षेत्रीय-अखंडता, संप्रभुता, राजनीतिक-स्वतंत्रता के खिलाफ अधिग्रहण की धमकी, परमाणु हथियारों के उपयोग या फिर उपयोग की धमकी की अस्वीकारा। ये कूटनीतिक सफलता तब और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जबकि रूस-यूक्रेन-युद्ध के मद्देनजर दोफाड़ हुई दुनिया में, इससे सम्बंधित मुद्दों पर आमसहमति असंभव प्रतीत हो रही थी। लेकिन घोषणा पत्र की अतिसामंजस्यपूर्ण भाषा ने भारतीय कूटनीति का लोहा मनवा ही लिया, जिसमें धुर विरोधी पक्षों के राष्ट्रों के निहित स्वार्थों को ध्यान में रखते हुए ड्राफ्ट किया गया था।

वर्तमान चुनौतीपूर्ण एवं अनिश्चित वैश्विक-पटल पर, जबकि कोरोना मात्र महामारी नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण विभाजक रेखा बनकर उभरा, और रही सही कसर रूस-यूक्रेन संघर्ष ने पूरी कर दी जिसने इस रेखा को एक गहरी खाई का रूप दे डाला। वैश्विक राजनैतिक संदर्भ में पूर्वी-पश्चिमी व उत्तरी-दक्षिणी आयामों में वैश्विक विभाजन और भी गहरा गया है। फलस्वरूप पनपी वैश्विक-शक्तियों के मध्य आपसी सामंजस्य की क्षीणता ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाया है चाहे वैश्विक व्यापार हो या व्यापक विकास के मुद्दे। इस अस्थिरता के परिणामस्वरूप, विश्व स्तर पर क्षेत्रीय संघर्षों और ग्लोबल आर्थिक मंदी की परिस्थितियां पैदा हो गई हैं। हालाँकि उम्मीद से भी अधिक, आपदा को अवसर मानते हुए, कोविड़ व यूक्रेन-युद्ध जैसे नकारात्मक व अतिहानिकारक कारकों के मध्य, भारत स्वहितों को निहित रखते हुए विश्व में अपनी अलग ही छाप छोड़ने में सफल रहा, चाहे वह कोविड़ प्रबंधन हो या अपार जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा या चिकित्सा सुविधाएं। यहाँ तक कि वैश्विक स्तर पर गरीब व पिछड़े देशों में ही नहीं अपितु सामर्थ्यवान अग्रिम पंक्ति के देशों को भी कोविड़-वैक्सीन आपूर्ति कर वसुधैव कुटुंबकम् के भारतीय संस्कृति के सिद्धांत को सिद्ध भी किया। यही समय था जब भारत की स्वदेशी वैज्ञानिक-तकनीक, जन-क्षमताओं और विदेश नीति की दूरद्रष्टित्या का विश्व से सही मायने मे परिचय हो पाया। फलतः विशिष्ट परन्तु स्पष्ट विदेशनीति के आधार पर एक के बाद एक कूटनीतिक सफलता, चाहे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी-सदस्यता की मांग का रूस, अमेरिका सहित धुरविरोधी तुर्की के द्वारा समर्थन हो या पश्चिमी तल्खी के बावजूद भारत का रूस से लगातार अपनी शर्तों पर सस्ता तेल खरीदना जारी रखना हो या फिर भारत का ब्रिटेन को पीछे छोड़ पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनना या फिर रूस से एस-400 वायु-सुरक्षा-प्रणाली लेने पर भी अमेरिका-काटसा-प्रतिबंध भारत पर छूट हो। अतिमहत्वकांक्षी अमेरिका-भारत-प्रशांत रणनीति भी नवीन सकारात्मक व्यवस्थाओं की ही द्योतक है।

याद रहे कि इससे पूर्व संयुक्त राष्ट्र की 77वीं महासभा में स्थाई सदस्यों द्वारा अस्थाई

सदस्य भारत के महत्व को बार-बार दोहराया गया, जो कि एक अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना थी। जिसने भारत के वैश्विक-स्तर पर महत्व को ही नहीं दर्शाया बल्कि विश्व की भारत के प्रति सकारात्मक, आशावान दृष्टिकोण को दर्शाया है और इसी श्रंखला में शामिल था भारत को जी-20 की अध्यक्षता का मिलना।

हालाँकि जी-20 का मूल एजेंडा आर्थिक सहयोग और वित्तीय स्थिरता का है, लेकिन वैश्विक व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, प्रभावी स्वास्थ्य सुविधाएं, कृषि विकास और भ्रष्टाचार निरोधी एजेंडा भी इसमें शामिल कर लिया गया है। शेरपा ट्रैक में बेहतर, बड़े और अधिक प्रभावी बहुपक्षीय विकास बैंक (मल्टीलैट्रल डेवलपमेंट बैंक) को बढ़ावा मिला। अगले 10 सालों में 200 बिलियन के अतिरिक्त फंड को उपलब्ध कराने पर भी मुहर लगी। डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को जी-20 वित्तीय समावेशन कार्य योजना में भी एकीकृत किया गया, जो 2024 और 2026 के बीच चलेगा। अफ्रीकन यूनियन, जिसमे पचपन देशों के समूह को इसका लाभ मिलेगा, इसका क्रेडिट चीन भी लेना चाहता था। भारत ने सदस्यता दिलवा कर अफ्रीकी-रिश्तों को और अधिक मजबूत किया। क्रिप्टो करेंसी पर कॉमन फ्रेमवर्क पर ग्लोबल पॉलिसी, ग्रीन डेवलपमेंट पर जोर, टेक्नोलॉजी की ग्रोथ और बेहतर फाइनेंशियल सिस्टम बनाने पर सभी सदस्यों की सहमति बनी। महत्वकांक्षी भारत-मिडिल ईस्ट यूरोप कॉरिडोर का ऐलान भी हुआ। गौरतलब है कि चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के जवाब में भारत, यूरोपियन यूनियन, अमेरिका और सऊदी अरब, ये चार देश इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर नामक मेगा प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। इस कॉरिडोर के बनने के बाद रेल से ही बड़ी सुगमता से भारत से यूरोप तक साजो सामान पहुंचाया जा सकेगा। भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, जॉर्डन, इजरायल, ग्रीस और यूरोप सहित अन्य देश भी एकसाथ व्यापारिक लाभ उठा सकेंगे।

भारत, अमेरिका और ब्राजील द्वारा ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस बनाने पर सहमति बनी जिसमें इन तीन संस्थापक सदस्य के साथ अर्जेंटीना, इटली सहित ग्यारह अन्य देश भी जुड़ेंगे। गौरतलब है कि भारत दुनिया में वैकल्पिक, स्वच्छ ईंधन के प्रयोग को बढ़ावा देने की नीति पर प्रतिबद्ध हैं, जिससे वैश्विक पर्यावरण संरक्षण को लाभ मिलेगा। इसका कच्चा माल मक्का, गन्ना, गेहूं जैसी अन्य फसलें व इनके अपशिष्ट भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। ऐसे में बायोएथेनॉल, बायोडीजल, बायोगैस जैसे जैव ईंधन की वैश्विक खपत बढ़ने से देश के किसानों को तो

ये कूटनीतिक सफलता तब और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जबकि रूस-यूक्रेन-युद्ध के मद्देनजर दोफाड़ हुई दुनिया में, इससे सम्बंधित मुद्दों पर आमसहमति असंभव प्रतीत हो रही थी। लेकिन घोषणा पत्र की अतिसामंजस्यपूर्ण भाषा ने भारतीय कूटनीति का लोहा मनवा ही लिया।

फायदा मिलेगा ही अपितु वायु प्रदूषण से मुक्ति के साथ जलवायु की संरक्षता करने में सहायता मिलेगी। वर्तमान में डिजिटल शब्द अपने आप में विकास का पर्याय बन चुका है, इस क्षेत्र में नवाचार, समावेशन और प्रतिस्पर्द्धा के बिना विकसित देशों की श्रेणी में आना नामुमकिन है अतः डिजिटल पब्लिक गुड्स जैसे आधार, यूपीआई, एनपीसीआई, डीबीटी, जन धनखातों, अकाउंट एग्रीगेटर्स आदि जोकि एक तरह के डिजिटल-पाथवे हैं, आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने और समाज को समग्र रूप से लाभ पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वित्तीय और सामाजिक समावेशन के डिजिटल परिदृश्य ने भारत में आज क्रांति की है, आमजीवन को इतना सुलभ बना दिया है, और हर देश भारत की इस उपलब्धि को आश्चर्य से देखते हुए अपने देश लागू करने हेतु उत्साहित दूसरी ओर हैं। अस्थिरता और भय के वर्तमान परिवेश में एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य पर जोर देकर भारत ने अपनी सांस्कृतिक के सार के रूप में सन्देश दिया तथा जी 20 का मूल मन्त्र रहे, वासुधैव-कुटुम्बकम इसी से प्रेरित है।

साझा-घोषणा पत्र में सभी देशों से क्षेत्रीय अखंडता, संप्रभुता और राजनीतिक स्वतंत्रता को बनाए रखने का आह्वान किया गया। सम्मलेन के दौरान ग्लोबल-साउथ के देशों के मुद्दों को प्राथमिकता से उठाकर भारत ने अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय भी दे दिया। घोषणा-पत्र में आतंकवाद को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरा के रूप में उल्लेख किया। यहाँ तक की आतंकवादी समूहों को सुरक्षित पनाहगाह और भौतिक या राजनीतिक समर्थन से वंचित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने का भी आह्वान किया गया। सीमा पर भारत के लिए सिरदर्द बढ़ाने वाले चीन और पाकिस्तान जैसे देशों का भारत के प्रति रवैया कुछ नरम होने के पीछे इन पहलुओं को एक प्रमुख कारण माना जा रहा है। साथ ही सभी देशों के साथ अपने ऐतिहासिक व नीतिगत विरोधी रहे तुर्की जैसे देश के द्वारा भी धार्मिक-सहिष्णुता तथा विविधता का सम्मान करने के लिए वचनबद्ध होने पर हस्ताक्षर कराने में सफलता प्राप्त की।

वीभत्स-आतंकवाद के शिकार नालंदा की तस्वीर को जी-20 के डिनर में भव्य स्थान के बैकड्रॉप में प्रदर्शित कर भारतवर्ष ने पिछले हजारो वर्षों में झेले आर्थिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक दमन का सन्देश एक झटके में ही दे दिया और वैश्विक नेताओं को ज्ञान और बुद्धिमत्ता के प्रसार में भारत के अभूतपूर्व योगदान, विचार की स्वतंत्रता जैसे लोकतंत्र के मूल सिधान्तों के जनक होने का स्मरण भी करा दिया। कुल मिला कर दिल्ली घोषणा-पत्र में महत्वांकाक्षी व्यापार-समझौते के रूप में अर्थ को तो साधा ही गया, साथ ही भारत को दशकों से खाने वाले मुद्दों को चुन-चुन कर शामिल कर भारत ने अपने अध्यक्षता के अवसर का पूर्ण दोहन भी किया और नालंदा के रूप में अपनी प्राचीनतम सभ्यता का सन्देश भी दे डाला जो सहस्रों वर्षो से आक्रमणकारियों के दमन झेलने के बाद आज भी श्रेष्ठतम है। ■

घट-घट के राम की लीला

राम जी तिवारी
पत्रकार

लोक में राम और रामलीला की व्याप्ति घट-घट से लेकर आध्यात्मिक प्राप्ति ब्रह्म तक है। रामनाम, रामतत्व और रामराज्य की अवधारणा तीनों के आलम्ब लोक-देव राम की लीला त्रेता युग से लेकर वर्तमान तक आदर्शमयी, प्रासंगिक, प्रेरणादायी और सर्वहित लोकमंगलकारी है।

राम इस लोक के अस्तित्व हैं। राम घट-घट में व्याप्त हैं। सृष्टि के प्रत्येक काया-पिण्ड में राम का वास है। इसलिए जम्बूद्वीप/आर्यावर्त या अखण्ड भारत में राम के स्वरूप का विमर्श वैदिक राम व लौकिक राम के रूप में होता है। इतिहास में राम नीतिमान राजा हैं और शास्त्रों में राम विष्णु के अवतार हैं। जबकि राम की लोक में व्याप्ति, ब्रह्म के रूप में हैं। राम लोक चेतना के पर्याय हैं। तभी तो श्रीराम लोक के हर मंगल, शुभ और अंतिम सत्य के प्रतिरूप हैं। लोक चेतना में आदर्श राज्य के रूप में रामराज्य, होली के अवसर पर होली रघुवीर ही खेलते हैं, दशहरा, दीवाली के अवसर पर रामलीला की जन-जन में व्याप्ति भी इसी का परिणाम है। इसीलिए रामलीला की व्यापकता का दायरा देश की सीमाओं से परे नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम, इंडोनेशिया, थाईलैंड, लाओस, कंबोडिया, म्यांमार आदि करीब 9 देशों में है। शारदीय नवरात्र में देश-विदेश में रामलीला के मंचन की धूम होती है। हिंदू जनमानस में नैतिकता, परस्पर सहयोग, बुराई पर अच्छाई की जीत, त्याग और आदर्श के लिए रामकथा का दुनिया भर में किसी न किसी रूप में मंचन होता है। रामलीला का मंचन भारत के साथ-साथ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग रूप में बड़े धूमधाम के साथ किया जाता है। दक्षिण और पूर्वी एशिया के लगभग सभी देशों में किसी न किसी रूप में रामलीला विद्यमान है। यानी रामलीला वसुधैव कुटुम्बकम् की वाहक है।

रामलीला शाब्दिक रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से जुड़ी विभिन्न लीलाओं का मंचन है। मुख्यतया यह आदकवि वाल्मीकि रचित आदि महाकाव्य रामायण और तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस महाकाव्य पर आधारित होती है। एक श्रृंखला के रूप में इसमें गीत, कथन, गायन और संवाद शामिल होते हैं। रामलीला का मंचन समग्र उत्तर भारत समेत देशभर में दशहरे के दौरान होता है। कई शताब्दियों से चली आ रही विश्व प्रसिद्ध, भव्य और प्राचीन रामलीला में बनारस के रामनगर की रामलीला, अयोध्या की रामलीला, वृंदावन, अल्मोड़ा, सतना, मधुबनी, प्रयागराज और दिल्ली की रामलीलाएं शामिल हैं।

रामलीलाओं का मंचन वाल्मीकि रामायण, श्रीरामचरितमानस, राधेश्याम रामायण जैसे ग्रंथों में वर्णित प्रसंगों से सराबोर करीब दस-बारह दिनों तक चलता है। लेकिन वाराणसी के रामनगर की रामलीला पूरे एक महीने तक चलती है। साथ ही वाराणसी की रामलीला सबसे पुरानी ज्ञात रामलीला में से एक है। इसकी शुरुआत करीब 477 साल पहले हुई थी। यानी 16वीं शताब्दी में।

इस तरह जन-जन के आराध्य राम की लीला मनोरंजन से कहीं अधिक विकारों से मुक्ति का ब्रह्मास्त्र है। शारदीय नवरात्र के करीब दस दिनों तक चलने वाली रामलीला से जन-जन को आदर्श परिवार, त्याग और राष्ट्र के प्रति वचनों को निभाने का समर्पण बोध प्राप्त होता है। इससे सहज ही रामनाम का बोध आत्मशोधन का आलंबन बनता है। चूंकि राजा, मर्यादा पुरुषोत्तम या अवतार से कहीं अधिक लोक में भगवान श्रीराम की स्वीकार्यता है। राम

सार्वभौमिक संबल और मंगल के रूप में स्वीकार्य हैं। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस की रचना से कई हजार वर्ष पहले रामायण महाग्रन्थ की रचना हो चुकी थी। थी। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में, वहीं तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में की थी। साथ ही करीब दो सौ से ज्यादा ऐसी रामकथाएं हैं जो दुनिया के अलग-अलग हिस्सों और भाषाओं में मौजूद हैं। इसके अलावा हजारों लोक कथाएं भी राम से जुड़ी हैं। यानी राम सगुण-निर्गुण और धर्म से परे संपूर्ण वसुधा एवं सभी मानव के हैं।

संस्कृति, हिन्दी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी राम कथा की उपलब्ध है। मराठी, बांग्ला, तमिल, तेलुगु ओडिया, गुजराती, मलयालम, कन्नड, असमिया, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में राम कथा लिखी गयी है। इसके अलावा महाकवि कालिदास, भास, भट्ट, प्रवरसेन, भवभूति, राजशेखर, सोमदेव, रामानंद, गुणादत्त, ईश्वर दास, केशवदास, गुरु गोविंद सिंह, समर्थ रामदास, संत तुकडोजी महाराज, मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आदि करीब तीन सौ से अधिक कवियों तथा संतों ने अलग-अलग भाषाओं में राम तथा रामायण के अन्य पात्रों से संबंधित काव्यों/कविताओं की रचना की है।

इस तरह राम शब्दों, भाषाओं, उपमाओं, सीमाओं और परिणामों से परे हैं, लेकिन भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति की आत्मा अर्थात् राम से परिचित कराने के लिए किसी ध्वनि, दृश्य और कथा की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में कालातीत से रामलीला ही वह सर्वश्रेष्ठ माध्यम रही है जिससे सहज रूप से आम जन मानस सनातन धर्म के मूल से प्रेरणा लेकर भारतीय संस्कृति के तत्वों को आत्मसात करता रहा है। रामलीला के प्रमुख पात्र श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, बाली, रावण, जटायु, समुद्र, मेघनाद, कुंभकर्ण और विभीषण सभी के जीवन से जुड़े प्रसंग से हम सभी को प्रेरणादायक शिक्षा मिलती है। रामलीला एक चरित-काव्य की तरह है, जिसमें

रामलीला शाब्दिक रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से जुड़ी विभिन्न लीलाओं का मंचन है। मुख्यतया यह आदकवि वाल्मीकि रचित आदि महाकाव्य रामायण और तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस महाकाव्य पर आधारित होती है। एक श्रृंखला के रूप में इसमें गीत, कथन, गायन और संवाद शामिल होते हैं। रामलीला का मंचन समग्र उत्तर भारत समेत देशभर में दशहरे के दौरान होता है।

राम का सम्पूर्ण जीवन-चरित हमें शिक्षा देता है कि हमेशा बुराई पर अच्छाई की ही जीत होती है। अत्याचारी कितना भी शक्तिशाली क्यों ना हो वह सच्चाई से एक न एक दिन निश्चित परास्त ही होता है। इसी तरह रामलीला से विविधता में एकता, सच्ची भक्ति, समर्पण, समान व्यवहार और व्यक्तिगत स्वार्थ से बड़ा त्याग आदि की शिक्षा मिलती है। चूंकि उपर्युक्त बिंदु आदर्श जीवन के आधार स्तंभ हैं, इसलिए वर्तमान में असंतुष्ट मनुष्य को रामलीला सहज ही आदर्श जीवन जीने की कला सिखाती है। रामलीला के अनेक पात्रों और विभिन्न प्रेरक प्रसंगों से व्यक्ति, समाज, देश यहां तक समूचा विश्व सच्चाई की प्रेरणा से सद्मार्ग पर बढ़कर रामराज्य की स्थापना में समन्वित रूप से सहभागी बन सकता है। रामलीला के विभिन्न चरण जीवन को सीख देते हैं कि आदर्श, सदाचार और मर्यादा जैसे गुणों को धारणकर जीवन और समाज की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

इस तरह रामलीला व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का सबसे सशक्त माध्यम है। रामलीला हमारी दृष्टि और संवेदनशीलता को प्रखर करती है जिससे समझ और चिंतन में राष्ट्रीय एकता की भावना मजूबत होती है। आधुनिक टेक्नोलॉजी के दौर में रामलीला, प्राचीन और आधुनिकता के समन्वय का बेहतरीन मंच है जो भौतिकता, आध्यात्मिकता, व्यवहार और सिद्धांत में समन्वय स्थापित करती है। यही नहीं बिखरते पारिवारिक भाव और क्षरण होते नैतिक मूल्यों को रोकने में रामलीला अद्वित्तीय है। इस तरह रामलीला धार्मिक पक्ष से अधिक शैक्षिक पहलुओं के लिए समन्वित चिंतन का संगम है। रामलीला से आदर्श गार्हस्थ्य जीवन, आदर्श पारिवारिक जीवन, पतिव्रत धर्म, आदर्श भातृधर्म, ज्ञान, त्याग, वैराग्य के साथ आदर्श राजधर्म और सदाचार की शिक्षा मिलती है। एक लाइन में कहें तो रामलीला, भगवान श्री राम की आदर्श मानव लीला को व्यक्त करने का सर्वोत्तम, अद्तवित्तीय और अनमोल माध्यम है। ■

नदी संस्कृति और उत्सव उल्लास

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के जबलपुर अधिवेशन में डिंडोरी से आये जनजातीय समाज के लोगों ने जो प्रस्तुति दी, उनके लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश-सब कुछ माँ नर्मदा ही थी। सनातन परम्परा व संस्कृति में शुरू से ही नदी को मां का स्थान दिया गया है। नदी में इतनी शक्ति हैं वह पत्थर को भी भगवान बना देती है। कहते भी हैं कि नर्मदा के कंकर, सब शिव शंकर। उधर नेपाल में खतरनाक रास्ते से मुक्तिनाथ, जो 3800 मीटर की ऊँचाई पर है, जाते समय काली गंडकी नदी बहती दिखती है। उसके पत्थर शालिग्राम हैं।

नदियों के किनारे ही तो हमारे प्राचीन नगर, महानगर या तीर्थस्थल हैं। तीर्थस्थल ही हमारी आस्था के केन्द्र हैं। हमारे अवतारों की जन्मभूमि भी नदियों वाले शहरों में है। इसलिए हमारे उत्सव में नदी में स्नान करना शामिल है। जीवनदायनी नदियों को लोग पूजते हैं, उनसे वर मांगते हैं।

हमारे यहाँ नदियों की दंत कथाएं हैं, कविताएं, चालीसा, आरती और गीत हैं। यहीं पर यह विचार की आवश्यकता भी है कि जो नदियां हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ी हैं, जीवनदायिनी-पुण्यदायिनी हैं, जिन्हें हमने अपना पालन-पोषण करने वाली मां समान माना है, उसके प्रति हम कितने संवेदनशील हैं। उसके पवित्रता और प्रवाह को

विजयदशमी को देश में कहीं महिषासुर मर्दिनी को सिंदूर खेला के बाद नदी में विसर्जित किया जाता है। नदी किनारे मेले का दृश्य होता है तो कहीं श्री राम की रावण पर विजय पर रावण, मेघनाथ, कुंभकरण के पुतले दहन किए जाते हैं। सबसे अनूठा 75 दिन तक मनाया जाने वाला बस्तर के दशहरे का रामायण से कोई संबंध नहीं है। अपितु बस्तर की आराध्या देवी माँ दन्तेश्वरी और देवी देवताओं की पूजा है।

बनाए रखने के लिए हम कितने सचेत रहते हैं। गणपित विसर्जन से लेकर अक्टूबर माह में श्राद्ध स्नान के विचार हमारे मन में अवश्य विचरणा चाहिए।

पितृ विसर्जन के तुरंत बाद 15 अक्तूबर से नवरात्र हैं और 20 अक्तूबर से दुर्गा पूजा। दुर्गा पूजा भारतीय उपमहाद्वीप व दक्षिण एशिया में मनाया जाने वाला सामाजिक-सांस्कृतिक धार्मिक वार्षिक हिन्दू पर्व है। पश्चिम बंगाल, असम, बिहार, झारखण्ड, मणिपुर, ओडिशा और त्रिपुरा में यह सबसे बड़ा उत्सव माना जाता है। नेपाल और बंगलादेश में भी बड़े त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। दुर्गा पूजा पश्चिमी भारत के अतिरिक्त दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, कश्मीर, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल में भी मनाया जाता है। समाज सुधारकों ने ब्रिटिश राज में इसे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों का प्रतीक भी बनाया। दिसम्बर 2021 में कोलकता की दुर्गापूजा को यूनेस्को की अगोचर सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया है।

इसी समय में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य की महिलाएं बड़े उत्साह से पूरे नौ दिन बतुकम्मा महोत्सव मनातीं हैं। ये शेष भारत के शरद नवरात्रि से मेल खाता है। प्रत्येक दिन बतुकम्मा उत्सव को अलग नाम से पुकारा जाता है। जंगलों से ढेर सारे फूल लाते हैं। फूलों की सात पर्तों से गोपुरम मंदिर की आकृति बनाकर बतुकम्मा अर्थात देवियों की माँ पार्वती महागौरी के रूप में पूजा जाता है। लोगों का मानना है कि बतुकम्मा त्यौहार पर देवी जीवित अवस्था में रहती हैं और श्रद्धालुओं की मनोकामना पूरी करतीं हैं। त्योहार के पहले दिन सार्वजनिक अवकाश होता है। नौ दिनों तक अलग अलग क्षेत्रीय पकवानों से गोपुरम को भोग लगाया जाता है और इस फूलों के उत्सव का आनन्द उठाया जाता है। नवरात्रि की अष्टमी को यह त्यौहार दशहरे से दो दिन पहले समाप्त है।

बतुकम्मा से मिलता जुलता ही तेलंगाना में कुवांरी लड़कियों द्वारा बोडेम्मा पर्व मनाया जाता है। यह सात दिनों तक चलने वाली गौरी

पूजा का पर्व है। महाअष्टमी और महानवमी को नौ बाल कन्याओं की पूजा की जाती है जो देवी नवदुर्गा के नौ रूपों का प्रतिनिधित्व करतीं हैं। हम भारतीय कन्या पूजन विदेश में रह कर भी करते हैं।

15 से 23 अक्तूबर तक तिरूमाला में ब्रह्मोत्सव मनाया जा रहा है किंवदंती है कि भगवान ब्रह्मा ने सबसे पहले तिरूमाला में ब्रह्मोत्सव मनाया था। तिरूमाला में तो हर दिन एक त्यौहार है और धन के भगवान श्री वेंकटेश्वर साल में 450 उत्सवों का आनन्द लेते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण ब्रह्मोत्सव है। जिसका शाब्दिक अर्थ है 'ब्रह्मा का उत्सव', जिसमें हजारों श्रद्धालु इस राजसी उत्सव को देखने जाते हैं। दशहरे की छुट्टियों में जगह जगह रात को रामलीला मंचन मंच पर होता है, जिसे बच्चे बहुत ध्यान से देखते हैं। लौटते हुए रामलीला के मेले से गत्ते, बांस, चमकीले कागजों से बने चमचमाते धनुष बाण, तलवार और गदा आदि शस्त्र खरीद कर लाते और वे दिन में पार्कों में रामलीला का मंचन करते हैं, जिसमें सभी बच्चे कलाकार होते हैं। उन्हें दर्शकों की जरुरत ही नहीं होती। इन दिनों सारा शहर ही राममय हो जाता।

जम्मू में आयोजित होने वाले सबसे बड़े हिंदू त्योहारों में से बहू मेला एक है। यह जम्मू के बहू किले में साल में दो बार नवरात्रों के दौरान मनाया जाता है। इस दौरान पर्यटक और स्थानीय लोग रंगीन पोशाकें पहनते हैं और मेले में खरीददारी करते हैं और खाने के स्टॉल में वहाँ के पारम्परिक खानों का स्वाद लेते हैं। शरदोत्सव दुर्गोत्सव एक वार्षिक हिन्दू पर्व है, जिसमें प्रांतों में अलग-अलग पद्धति से देवी पूजन, कन्या पूजन की परम्परा है। गुजरात का नवरात्र में किया जाने वाला गरबा, डांडिया नृत्य तो पूरे देश का हो गया है। जो नहीं करते, वे देखने जाते हैं।

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक में दशहरे से पहले नौ दिनों को तीन देवियों की समान पूजा के लिए तीन-तीन दिनों में बांट दिया है। पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी को समर्पित हैं। अगले तीन दिन शिक्षा और कला की देवी सरस्वती को समर्पित है और माँ शक्ति दुर्गा को समर्पित हैं और विजयदशमी का दिन बहुत शुभ माना जाता है। बच्चों के लिए विद्या आरंभ के साथ कला में अपनी अपनी शिक्षा शुरु करने के लिए इस दिन सरस्वती पूजन किया जाता है।

कावेरी संकरमना 18 अक्तूबर हमारे देश की पाँच पवित्र नदियों में शुमार दक्षिण की गंगा, कावेरी का उदगम स्थल, ताल कावेरी है, ब्रहमगिरि की पहाड़ियों में भागमंडला मंदिर है। यहाँ से आठ किलामीटर की दूरी पर तालकावेरी है, कावेरी का उद्गम स्थल, मंदिर के प्रांगण में ब्रह्मकुण्डिका है, जहाँ श्रद्धालु स्नान करते हैं। इस वर्ष 17 अक्टूबर को कावेरी संक्रमणा का त्यौहार है।

आज हर रामकथा के मूल में भगवान बाल्मीकि की रामायण है। पहले महाकाव्य 'रामायण' के रचयिता महाकवि महर्षि वाल्मिकी जयंती अश्विन महीने की पूर्णिमा (इस वर्ष 28 अक्तूबर) शरद पूर्णिमा को मनाई जाती है।

जीवनदायिनी माता कावेरी ने दूर दूर तक कैसा अतुलनीय प्राकृतिक सौंदर्य और प्राकृतिक संपदा बिखेरी है।

कोंगाली बिहु (18 अक्टूबर) इस समय धान की फसल लहलहा रही होती है। लेकिन किसानों के खलिहान खाली होते हैं। इसमें खेत में या तुलसी के नीचे दिया जलाकर अच्छी फसल की कामना करते हैं यानि यह प्रार्थना उत्सव है। भेंट में एक दूसरे को गमुशा, हेंगडांग (तलवार) देते हैं। कोंगाली बिहू से ये भी युवाओं को समझ आ जाता है कि मितव्यवता से भी उत्सव मनाया जाता है।

महाभारत के रचियता वेदव्यास महाभारत के बाद मानसिक उलझनों में उलझे थे, तब शांति के लिये वे तीर्थाटन पर चल दिए। दंडकारण्य (बासर का प्राचीन नाम) तेलंगाना में, गोदावरी के तट के सौन्दर्य ने उन्हें कुछ समय के लिए रोक लिया था। यहीं ऋषि वाल्मिकी ने रामायण लेखन से पहले, माँ सरस्वती को स्थापित किया और उनका आर्शीवाद प्राप्त किया था। मंदिर के निकट वाल्मीकि जी की संगमरमर की समाधि है। बासर गाँव में आठ तालाब हैं, जिसमें वाल्मीकि तीर्थ है। पास में ही वेदव्यास गुफा है। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा की मूर्तियाँ हैं। पास ही महाकाली का विशाल मंदिर है। नवरात्र में यहां बड़ी धूमधाम रहती है। आज उस माँ शारदे निवास को 'श्री ज्ञान सरस्वती मंदिर' कहते हैं। 'अक्षर ज्ञान' विजयदशमी को इसी मंदिर में मनाया जाता है, जो बच्चे के जीवन में औपचारिक शिक्षा को दर्शाता है। बासर में गोदावरी तट पर स्थित इस मंदिर में बच्चों को अक्षर ज्ञान से पहले अक्षराभिषेक के लिए लाया जाता है और प्रसाद में हल्दी का लेप खाने को दिया जाता है।

विजयदशमी को देश में कहीं महिषासुर मर्दिनी को सिंदूर खेला के बाद नदी में विसर्जित किया जाता है। नदी किनारे मेले का दृश्य होता है तो कहीं श्री राम की रावण पर विजय पर रावण, मेघनाथ, कुंभकरण के पुतले दहन किए जाते हैं। सबसे अनूठा 75 दिन तक मनाया जाने वाला बस्तर के दशहरे का रामायण से कोई संबंध नहीं है। अपितु बस्तर की आराध्या देवी माँ दन्तेश्वरी और देवी देवताओं की पूजा है।

मैसूर का दस दिवसीय दशहरा का मुख्य आर्कषण शाम 7 बजे से रात 10 बजे तक मैसूर पैलेस की रोशनी, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम और विजयदशमी पर दशहरा जुलूस और प्रदर्शनी है।

आज हर रामकथा के मूल में भगवान बाल्मीकि की रामायण है। पहले महाकाव्य 'रामायण' के रचयिता महाकवि महर्षि वाल्मिकी जयंती अश्विन महीने की पूर्णिमा (इस वर्ष 28 अक्तूबर) शरद पूर्णिमा को मनाई जाती है। जगह जगह जुलूस और शोभायात्रा निकाली जाती है। लोगों में बहुत उत्साह होता है। कहीं कहीं अविवाहित युवतियां सुबह नदी स्नान करने जाती हैं कहते हैं कि ऐसा करने से उन्हें अच्छा वर मिलता है। शरद पूर्णिमा के अगले दिन से ही कार्तिक स्नान, तुलसी पूजन शुरु हो जाता है। इन सभी उत्सवों में प्रकृति वनस्पति और नदियाँ (जल) है यानि हमारी एक ही संस्कृति, हमें जोड़ती है। ■

भारत की अंतरिक्ष में बड़ी छलांग

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

भारत पूरे विश्व में पहला देश है जिसने चन्द्रयान-3 को चन्द्रमा के दक्षिणी पोल पर सफलतापूर्वक उतार लिया है। अमेरिका, रूस एवं चीन सहित विश्व का कोई भी देश अभी तक चन्द्रमा के दक्षिणी पोल पर अपना यान उतारने में सफल नहीं हो सका है। निश्चित ही भारत की यह सफलता न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के समस्त देशों के लिए गर्व का विश्व होना चाहिए। यदि चन्द्रयान-3 अपने उद्देश्यों में सफल हो जाता है जैसे चन्द्रमा पर पानी उपलब्ध है अथवा नहीं, चन्द्रमा पर किस प्रकार के खनिज पदार्थ (सोना, प्लेटिनम, टाइटेनियम, यूरेनियम, आदि) रासायनिक पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, मिट्टी एवं अन्य तत्व पाए जाते हैं, आदि का पता लगने पर इस जानकारी का लाभ भारत के साथ ही पूरे विश्व को भी होने जा रहा है। परंतु, पश्चिमी देशों में कुछ तत्व भारत की इस महान उपलब्धि को सकारात्मक दृष्टि से न देखते हुए इस संदर्भ में अपनी नकारात्मक सोच को आगे बढ़ाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

दरअसल, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था आज बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था का रूप ले चुकी है एवं इस अर्थव्यवस्था पर अभी तक केवल कुछ विकसित देशों- अमेरिका, रूस, चीन, कनाडा, ब्रिटेन आदि का वर्चस्व रहा है। अब चूंकि भारत इस क्षेत्र में अपनी गहरी पैठ बनाता हुआ दिखाई दे रहा है, अतः विकसित देश भारत की इस महान उपलब्धि को पचा नहीं पा रहे हैं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में हाल ही के समय में भारत का एक तरह से वर्चस्व स्थापित होता दिखाई दे रहा है। आज पूरी दुनिया ही अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत का लोहा मानने लगी है। भारत ने इस क्षेत्र में अमेरिका, रूस एवं चीन जैसे देशों के एकाधिकार को तोड़ा है। भारत आज समूचे विश्व में सैटेलाइट के माध्यम से टेलीविजन प्रसारण, मौसम के सम्बंध में भविष्यवाणी और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है और चूंकि ये सभी सुविधाएं उपग्रहों के माध्यम से ही संचालित होती हैं, अतः संचार उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने की मांग आज समस्त देशों के बीच बढ़ रही है। चूंकि भारतीय तकनीक तुलनात्मक रूप से बहुत सस्ती है अतः कई देश अब इस सम्बंध में भारत की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इन परिस्थितियों के बीच चंद्रयान-3 की कम लागत में सफल लैंडिंग के बाद वैश्विक स्तर पर व्यवसायिक तौर पर भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गयी है। आज भारतीय इसरो की, कम लागत और सफलता की गारंटी, सबसे बड़ी ताकत बन गयी है। अंतरिक्ष बाजार में भारत की धमक का यह स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहा है और इस क्षेत्र में भारत एक धूमकेतु की तरह बनकर उभरा है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानि इसरो अपने 100 से अधिक अंतरिक्ष अभियान (चन्द्रमा मिशन, मंगल मिशन, स्वदेशी अंतरिक्ष शटल, एवं चन्द्रयान-3 सहित) सफलतापूर्वक सम्पन्न कर चुका है। इसलिए कई विकसित देश भारत की इस असाधारण सफलता को पचा नहीं पा रहे हैं। पूर्व में भी कुछ विकसित देश भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम को सफल होने से रोकने हेतु कुछ बाधाएं खड़ी करने के प्रयास कर चुके हैं। कई बार तो कुछ भारतीय वैज्ञानिकों को ही निशाना बनाने के प्रयास भी किए गए हैं।

भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान कार्य 60 के दशक में प्रारम्भ हुआ था एवं वर्ष 1969 में देश

में इस कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इसरो (भारतीय अंतरिक्ष एवं अनुसंधान संस्थान) की स्थापना की गई थी। इसरो ने पिछले 54 वर्षों के अपने कार्यकाल में अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर कुछ देश तथा निजी कम्पनियां अंतरिक्ष अनुसंधान का वाणिज्यिक उपयोग करने हेतु प्रयासरत हैं। वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का आकार 45,000 करोड़ अमेरिकी डहलर का था, जो आगे आने वाले समय में 1 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाएगा। वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अमेरिका की भागीदारी 56.4 प्रतिशत, यूनाइटेड किंगडम की 6.5 प्रतिशत, कनाडा की 5.3 प्रतिशत, चीन की 4.7 प्रतिशत एवं जर्मनी की 4.1 प्रतिशत है। अब भारत भी अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अपनी भागीदारी, जो वर्तमान में 2 प्रतिशत से कुछ अधिक (960 करोड़ अमेरिकी डॉलर) है, को तेजी से आगे बढ़ाना चाहता है। एक अनुसंधान रिपोर्ट (आर्थर डी लिटिल) में यह दावा किया गया है कि भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का आकार वर्ष 2040 तक 10,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाएगा। भारत ने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु 6 मार्च, 2019 को न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) को 100 करोड़ रुपए की अधिकृत शेयर पूंजी के साथ बेंगलुरू में इसरो की वाणिज्यिक शाखा के रूप में स्थापित किया है।

इसरो की स्थापना के बाद से ही भारत के लिये इसरो ने कई कार्यक्रमों एवं अनुसंधानों को सफल बनाया है। देश में दूरसंचार, प्रसारण और ब्रॉड्बैंड अवसंरचना के क्षेत्र में विकास के लिए इसरो ने उपग्रह संचार के माध्यम से कार्यक्रमों को चलाया है। इन उपग्रहों के माध्यम से भारत में दूरसंचार, टेलीमेडिसिन, टेलीविजन, ब्रॉडबैंड, रेडियो, आपदा प्रबंधन, खोज और बचाव अभियान जैसी सेवाएं प्रदान कर पाना एवं मौसम पूर्वानुमान, संसाधनों की मैपिंग आदि करना संभव हुआ है। वर्ष 2020 में ही केंद्र सरकार ने उपग्रहों की स्थापना और संचालन के क्षेत्र में 100 प्रतिशत एफडीआइ की अनुमति निजी क्षेत्र को दी थी, जिसके परिणामस्वरूप विगत तीन वर्षों में देश में लगभग 150 नए स्टार्टअप्स प्रारम्भ हुए हैं। अप्रैल 2023 में, भारत सरकार ने भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 की घोषणा की है। यह नीति भारत के अंतरिक्ष विभाग की भूमिका को बढ़ाएगी और अनुसंधान, शिक्षा, स्टार्ट-अप और उद्योग को बढ़ावा देगी। भारत की अंतरिक्ष नीति अंतरिक्ष गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में निजी भागीदारी की परिकल्पना करती है और उसे प्रोत्साहित करती है। यह नीति भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र को खोलती है, जिससे निजी क्षेत्र को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाने का मौका मिलता है। इसका उद्देश्य भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल विभिन्न संस्थानों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करना भी है।

चन्द्रयान-3 की चंद्रमा के दक्षिणी सतह पर सफल लैंडिंग और सौर मंडल के अध्ययन के लिए आदित्य एल-1 के प्रक्षेपण ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों को एक नए उत्साह से भर दिया है। कम खर्च में उपग्रह प्रक्षेपण से लेकर अंतरिक्ष के अध्ययन में भारत ने अब न केवल पश्चिम के एकाधिकार को तोड़ दिया है बल्कि इस क्षेत्र में विश्व का सिरमौर बनने की ओर अग्रसर है।

कुछ दशक पहले वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में कुछ ही देशों का वर्चस्व था। भारतीय विज्ञानियों की मेहनत एवं दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि इस मोर्चे पर भारत अब विकसित देशों के साथ खड़ा है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर भारत की साख बढ़ाने का प्रमुख कारण यह है कि पिछले एक दशक में इस क्षेत्र में विकास के अनेक नए आयाम स्थापित किए गए हैं। आज वैश्विक स्तर पर इसरो छठी सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी के रूप में स्थापित हो चुका है। वर्ष 2014 में भारत विश्व में पहली बार में ही सफलतापूर्वक मंगल ग्रह पर पहुंचने वाला देश बन चुका है। हाल ही में इसरो ने रीयूजेबल लांच व्हिकल (आरएलवी) के प्रक्षेपण में बड़ी सफलता हासिल की है। यह उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित कर वापस लौट आएगा, जिससे न केवल इसकी लागत में कमी आएगी बल्कि मानव को अंतरिक्ष में घुमाने में भी इसका प्रयोग किया जा सकेगा। वर्ष 2024 तक अंतरिक्ष में मानव एवं रोबोट को भेजने की योजना है।

एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर 17,000 छोटे उपग्रहों को प्रक्षेपित किया जाना है। इसके लिये इसरो ने स्माल सैटेलाइट लांट व्हीकल (एसएसएलवी) का निर्माण किया है। अब पीएसएलवी और एसएसएलवी मिलकर भविष्य में उपलब्ध होने वाले बाजार के लिये कम लागत पर लोजिस्टिक उपलब्ध करा सकते हैं। भारत में पहले से ही डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रम तथा स्मार्ट सिटी जैसे मिशन चलाए जा रहे हैं। यह कार्यक्रम भारत में न्यू स्पेस स्टार्टअप को सहयोग प्रदान कर कर रहे हैं। ऐसे स्टार्टअप विभिन्न तकनीकों और सेवाओं का निर्माण करते हुए इसरो के वैश्विक उपभोक्ता वर्ग (देश तथा निजी संस्थान) को आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार इसरो और स्टार्टअप तथा विभिन्न निजी कम्पनियां आपस में मिलकर वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की भागीदारी बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिका और पश्चिमी देशों के बेहद महंगे स्पेस मिशनों के मुकाबले भारत की अंतरिक्ष यात्रा चूंकि काफी मितव्ययी है, ऐसे में दुनिया के आर्थिक रूप से पिछड़े देश इसरो के माध्यम से अपने उपग्रह लांच कर पाएंगे। स्वदेशी उपग्रह के निर्माण और उपग्रह प्रक्षेपण की कम तुलनात्मक लागत के कारण वैश्विक स्तर पर भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। 2017 में इसरो ने कीर्तिमान स्थापित करते हुए 104 उपग्रहों को एक साथ अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित किया था, जिसमें 101 स्वदेशी उपग्रह थे। इस उपलब्धि के कारण भारत उपग्रहों के प्रक्षेपण करने वाले पसंदीदा देश के रूप में उभरा है। ■

भस्मासुर पाल रहे ट्रूडो को भारत का करारा जवाब

विक्रम उपाध्याय
वरिष्ठ पत्रकार

कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो का परिवार शुरू से ही अपने देश में अलगाववादियों-आतंकवादियों को पनाह देता रहा है। वर्तमान समय में ट्रूडो सरकार अपने देश का विश्वास खो चुकी है। ऐसे में उन्होंने अपने खालिस्तानी समर्थकों को खुश करने का जो बचकाना दांव खेला, उससे वे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर तो शर्मशार हो रहे हैं। बदलते भारत ने अपनी अन्तरराष्ट्रीय छवि और बढ़ती ताकत के अनुसार ही सटीक प्रतिक्रिया दी है।

जस्टिन ट्रूडो 2015 से कनाडा के प्रधानमंत्री हैं और वह आगे भी रहना चाहते हैं। उनके पिता पियरे ट्रूडो 15 साल प्रधानमंत्री रहे थे। पर कनाडा की जनता नहीं चाहती कि जस्टिन अब और प्रधानमंत्री पद पर रहें। इसी साल 18 से 23 अगस्त के बीच में अबैकस डाटा ने एक नेशनल सर्वे किया था जिसमें 2,189 युवाओं ने भाग लिया था। सर्वे में भाग लेने वाले 56 प्रतिशत युवकों का सीधा कहना था कि अब जस्टिन को अपने पद से उतर जाना चाहिए। केवल 27 प्रतिशत युवकों ने ही उनको अपनी पसंद बताया था। जस्टिन को भी मालूम है कि मुद्रा स्फीति बढ़ने, मकान बहुत महंगे होने और कंजरवेटिव पार्टी का ग्राफ तेजी से बढ़ने के कारण उन पर पद छोड़ने का दबाव है। कुछ दिनों पहले ही उनसे पत्रकारों ने पूछा भी कि क्या वे पद छोड़ रहे हैं, तब ट्रूडो ने ना में जवाब दिया था और कहा था कि उनके पास बहुत से महत्वपूर्ण काम करने को है। भारत पर सनसनीखेज इल्जाम लगाकर अपनी कुर्सी बचाने की जुगत ही संभवतः उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण काम था, जो उन्होंने किया।

कनाडा में अभी आम चुनाव में होने में दो साल का समय है। वर्तमान हालात में ट्रूडो के लिए इतने लंबे समय तक बने रहना संभव नहीं था, क्योंकि ट्रूडो लगातार विफल हो रहे हैं। एक ऊर्जावान नेता की बजाय वे उलझे हुए नेता लग रहे हैं। उन्होंने हाल ही में अपनी पत्नी को तलाक देने की घोषणा भी की है, जिसका कनाडा के कंजरवेटिव नेताओं ने खूब मजाक भी उड़ाया। भारत पर आरोप लगाकर कनाडाई जनता का समर्थन प्राप्त करने के जोखिम भरे कदम को उठाने से पहले वह राजनीतिक कलाबाजी को आजमा चुके हैं। इसी साल 26 जुलाई को उन्होंने अपनी कैबिनेट में एक बड़ा बदलाव कर सात लोगों को शामिल किया था। यह बदलाव भी काम नहीं आया और कनाडा की जनता का गुस्सा उनके प्रति कम नहीं हुआ, जिसका सबूत कैबिनेट में बदलाव के बाद आया नेशनल सर्वे रहा।

ट्रूडो परिवार एवं खालिस्तानी आतंकवादियों का संबंध बहुत पुराना है। 23 जून, 1985 को एयर इंडिया का विमान 182 टोरंटो से लंदन जा रहा था। उसमें 329 लोग सवार थे। बीच आसमान में इस जहाज में विस्फोट हुआ और सभी लोग मारे गए। इतिहास में इसे कनिष्क एयर इंडिया बॉबिंग के नाम से इसे दर्ज किया गया। इस बम कांड में खालिस्तानी आतंकी तलविंदर सिंह परमार का नाम आया। यह आतंकवादी भारत में एक पुलिस अधिकारी की हत्या कर कनाडा फरार हो गया था। 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने तब इन्हीं जस्टिन ट्रूडो के पिता और कनाडा के प्रधानमंत्री पियरे ट्रूडो से अनुरोध किया था कि वह भारत में वांछित परमार को भारत को सौंप दे, लेकिन तब सीनियर ट्रूडो ने यह कहकर उस आतंकवादी को भारत को सौंपने से इनकार कर दिया कि उनका देश भारत के साथ प्रत्यार्पण की संधि से नहीं बंधा है। कनाडा की सरकार तब से ही अपने देश में खालिस्तानी आतंकियों को पाल रही है। यही वजह है कि ट्रूडो परिवार और खालिस्तानी नेताओं के बीच मधुर संबध चले आ रहे हैं।

पूरे कनाडा में भले ही सिख समाज आबादी के हिसाब से केवल 2.1 प्रतिशत है, पर कुछ जगह इनकी संख्या छह प्रतिशत से भी अधिक है। ब्रिटिश कोलंबिया जहां ट्रूडो का सबसे अधिक समय बीता है, वहां सिखों की आबादी

छह प्रतिशत है। वैंकुवर, टोरंटो और कैलगेरी में बड़े-बड़े गुरूद्वारे हैं। ये गुरूद्वारे कनाडा की राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इन गुरूद्वारों में कनाडा की लिबरल और कंजरवेटिव दोनों पार्टियों की पैठ है। कई सिख नेता इन्हीं गुरूद्वारों के प्रभाव से कनाडा की राजनीति में अपनी पकड़ बनाए हुए हैं।

कनाडा में 2019 में चुनाव प्रचार के दौरान ही जस्टिन ट्रूडो के समर्थन के बदले सिखों के स्वेच्छाचार का मुद्दा उठा था। तब कुछ पार्टियों ने यह नारा दिया था कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कुछ लगाम लगनी चाहिए। पर ट्रूडो की पार्टी ने सिखों से कुछ और वायदा किया। उस समय वर्ल्ड सिख ऑर्गेनाइजेशन के कानूनी सलाहकार बलप्रीत सिंह ने कहा था- 'यह कनाडा के लिए एक बहुत बड़ा बदलाव का क्षण है। अंततः नस्लों का विषय एक चुनावी मुद्दा बन गया है। एक देश के रूप में इस मसले को राजनीतिक तौर पर लेंगे। अब इस मामले आगे और भी कई चीजें आएंगी।' और हुआ भी ऐसा ही। सिखों को अपनी पहचान के साथ रहने, अलगाववादियों को खुले में प्रदर्शन करने और भारत विरोधी प्रस्तावों एवं पेपर्स प्रस्तुत करने में कहीं कोई रोक नहीं लगी।

जस्टिन ट्रूडो ने खालिस्तानी नेता हरजीत एस सज्जन को अपना रक्षा मंत्री बना दिया। फिलहाल सज्जन मिनिस्टर फॉर इमरजेंसी प्रिपेडनेस और पैसिफिक इकॉनोमिक डेवलपमेंट है। सज्जन को लेकर भारत सरकार कई बार कनाडा सरकार को सचेत कर चुकी है। लेकिन ट्रूडो गर्व से यह कहते हैं कि भारत सरकार में जितने सिख मंत्री नहीं है उससे अधिक उन्होंने सिखों को मंत्री बनाया है।

ट्रूडो के लिए समस्या सिर्फ अपनी लोकप्रियता बचाने की नहीं है बल्कि सरकार बचाने की भी है। इस समय उनकी पार्टी को सदन में बहुमत नहीं है। उनको समर्थन दे रही है न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी, जिसके अध्यक्ष हैं जगमीत सिंह। जगमीत सिंह पेशे से वकील रहे हैं, लेकिन कनाडा में वह खुलेआम खालिस्तानी आंदोलन का समर्थन करते हैं। जगमीत ने भारत में किसान आंदोलन का खुला समर्थन किया था और प्रधानमंत्री मोदी की खुलकर आलोचना की थी । जगमीत की पार्टी के पास इस समय 24 सीटें हैं और जस्टिन ट्रूडो का समर्थन कर रहे हैं। इन्हीं जगमीत ने पंजाब में सक्रिय हुए और खालिस्तान की मांग फिर से दोहराने वाले अमृत पाल को पंजाब पुलिस से बचाने के लिए कनाडा सरकार को हस्तक्षेप करने के लिए भी कहा था। स्पष्ट है जस्टिन ट्रूडो अपनी सरकार बचाने के चक्कर में भारी गलती कर बैठे हैं।

ट्रूडो ने जी 20 के सम्मेलन से लौटते ही सीनेट में भारत के खिलाफ बयान देकर खुद के लिए ही गड्ढा खोद लिया है। ना तो कनाडा के अंतरराष्ट्रीय सहयोगी जस्टिन ट्रूडो की बातों को गंभीरता से ले रहे हैं और ना उनको

ट्रूडो शायद जानते नहीं कि भारत अब अस्सी के दशक का भारत नहीं रहा। भारत ने बहुत साफ कर दिया है कि वह अपने देश में किसी भी प्रकार की आतंकवादी और अलगाववादी गतिविधियों को चलने नहीं देगा और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी आतंकवाद के समर्थकों और आतंकवादियों को पनाह देने वालों को उन्हीं की भाषा में जवाब देगा।

कनाडा के अंदर ही कोई सहयोग मिल रहा है। बल्कि उनके इस दावे पर कि कनाडा की खुफिया एजेंसियों के पास इस तरह की सूचना है जिससे खालिस्तान समर्थक नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार का हाथ हो सकता है, कनाडा में ही कोई विश्वास नहीं कर पा रहा है। कंजरवेटिव नेता और विपक्ष के नेता पियरे पोलिवरे ने जस्टिन ट्रूडो को इस मामले में झूठा करार दिया है। ट्रूडो ने दावा किया था कि उन्होंने विपक्ष के नेता को अलग से एकांत मीटिंग में खुफिया एजेंसियों की जांच के बारे में बता दिया था, जबकि पियरे ने दावा किया कि ट्रूडो ने उनसे एकांत में भी वही बात कहीं जो उन्होंने सीनेट में सबसे सामने कहा था। कनाडा के मीडिया में इस बात की खबरें और समीक्षा खूब आ रही है कि जस्टिन ट्रूडो ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक बेहद बचकाना हरकत की है।

ट्रूडो सरकार के भारत विरोधी रवैये से ना तो ब्रिटेन सहमत है, ना अमेरिका और ना ही आस्ट्रेलिया। इन तीनों बड़े देशों ने स्पष्ट कह दिया है कि उनका भारत के साथ द्विपक्षीय संबंध और समझौता पहले की ही तरह जारी रहेंगे। उलटे कनाडा के लिए भारत सरकार की नाराजगी महंगी पडती दिखाई दे रही है। जस्टिन ट्रूडो ने बचकाना हरकत करते हुए जिस तरह से भारत का नाम लिया और उसके बाद अपने खालिस्तानी समर्थकों को खुश करने के लिए भारतीय राजदूत को वापस भेजने की बात की, उन्हें उम्मीद नहीं थी कि भारत की ओर से उसकी लगभग दोगुनी प्रतिक्रिया होगी। भारत ने प्रतिक्रिया में न केवल कनाडा के राजदूत को वापस जाने को कह दिया बल्कि एक कदम आगे बढ़ाते हुए कनाडा में रहने वाले भारतीयों, विशेषकर हिन्दू समुदाय की सुरक्षा का हवाला देते हुए एडवाइजरी जारी कर दी। इतना ही नहीं कनाडा के लिए नए वीसा जारी करने पर भी रोक लगा दी।

ट्रूडो शायद जानते नहीं कि भारत अब अस्सी के दशक का भारत नहीं रहा। कनाडा के कस-बल हांलाकि ढीले पड़ रहे हैं। संभव है कि कुछ दिनों में ही ट्रूडो को अन्तरराष्ट्रीय शर्मिंदगी के साथ घरेलू मोर्चे पर भी मुंह की खानी पड़े। पर भारत ने बहुत साफ कर दिया है कि वह अपने देश में किसी भी प्रकार की आतंकवादी और अलगाववादी गतिविधियों को चलने नहीं देगा और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी आतंकवाद के समर्थकों और आतंकवादियों को पनाह देने वालों को उन्हीं की भाषा में जवाब देगा। पाकिस्तान के बाद अब सबक सीखने की बारी कनाडा की है। घर में घुसकर मारने के भारत के दावे से प्रभावित कनाडा के प्रधानमंत्री ने आरोप तो लगा दिए, पर साबित यही हुआ कि भारत की वर्तमान सरकार और उसका नेतृत्व आतंकवाद और आतंकवादियों के मामले में दुनिया की किसी भी ताकत से आंखों में आंख डालकर बात करता है। ■

स्वातन्त्र्य योद्धा डॉ. हेडगेवार

नरेन्द्र भदौरिया
राष्ट्रवादी विचारक एवं लेखक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने कांग्रेस संगठन और क्रान्तिकारियों के संगठन अनुशीलन समिति के साथ मिलकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी थी। वह खिलाफत आन्दोलन के समर्थन में भारत में आन्दोलन करने से सहमत तो नहीं थे पर महात्मा गाँधी के आग्रह पर साथ रहे। जंगल आन्दोलन, डांडी सत्यागह आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन सहित विभिन्न क्रियाकलापों में सक्रिय रहे। साथ ही कांग्रेस के कई अधिवेशनों में मुख्य भूमिकाओं का निर्वहन किया।

युग प्रवर्तक डॉक्टर हेडगेवार ने स्वातन्त्र्य आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी से कहा था कि स्वदेश, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वधर्म और स्वसंस्कृति की स्थापना के बिना स्वतन्त्रता मिली भी तो वह अधूरी रहेगी। ऐसी अधूरी स्वतन्त्रता मिली तो देश मानसिक, राजनीतिक दोनों रूपों में परकीय सत्ता का अंधानुकरण करने लगेगा। ऐसी अधूरी स्वतन्त्रता के दोष का निवारण करने के लिए भारतीय समाज को फिर से खड़ा करना पड़ेगा। स्वसंस्कृति और स्वभाषा के साथ स्वत्व की गरिमा लौटाये बिना मिलने वाली अधूरी स्वतन्त्रता के कारण भारत में मानसिक पराधीनता का बोलबाला होगा। देश में बार बार अलगाववाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, सामाजिक विषमता पाँव पसारती रहेगी।

डॉक्टर हेडगेवार ने बापू को सुझाव दिया था कि स्वातन्त्र्य आन्दोलन के साथ ही यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हमारे स्वतन्त्र भारत का भावी स्वरूप क्या होगा। निश्चित रूप से इसके लिए राष्ट्रभक्त समाज की संरचना बनानी चाहिए। बापू ने डॉक्टर हेडगेवार की बात टालते हुए कहा था - एक बार स्वतन्त्रता मिलने के बाद सभी मिलकर भावी स्वरूप तय कर लेंगे, बापू ने डॉक्टर हेडगेवार की दृष्टि से भारत के भविष्य की परिकल्पना की होती तो विभाजन के साथ मिली स्वतन्त्रता का विकृत स्वरूप समस्या बनकर खड़ा नहीं होता । भारत की 1947 की स्वतन्त्रता को जब श्रेष्ठ चिन्तकों ने अधूरी स्वतन्त्रता कहा तो निन्दा के तीखे तीर चलाकर उन्हें चुप करा दिया गया। पर क्या डॉक्टर हेडगेवार की आशंकाएं निर्मूल थीं। जो रक्तरंजित भारत कांग्रेस के तत्कालीन नेताओं को अंग्रेजों ने सौंपा था वह देशवासियों के सपनों का वास्तविक स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वत्व पर आधारित भारत तो नहीं था। ऐसी अधूरी स्वतन्त्रता एक गहरे षड्यन्त्र का दुष्परिणाम भर थी, जिसे आहत मन से स्वीकार करना पड़ा था।

संघ निर्माता डॉक्टर हेडगेवार का जीवन भी भारत की स्वतन्त्रता, एकता और अखण्डता तथा परम वैभव के लिए समर्पित रहा है। उनका जीवन एक देशभक्त का जीवन रहा। उन्हीं के मार्ग पर चलकर संघ के स्वयंसेवक लौकिक प्रसिद्धि से दूर रहकर भारत की स्वतन्त्रता और एकता की रक्षा के लिए सतत सक्रिय रहते हैं। भारत की सर्वांगीण उन्नति के लिए संघ के स्वयंसेवक पूरे सामर्थ्य के साथ अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

डॉक्टर हेडगेवार एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। उन्होंने कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में स्वतन्त्र भारत की वास्तविक परिकल्पना का विशद प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। डॉक्टर हेडगेवार स्वातन्त्र्य आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के योद्धा थे। अनुशीलन समिति में उनकी सक्रियता से उस समय क्रान्तिवीरों को बड़ा बल मिला था । नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अन्य कई दिग्गज नेताओं - चिन्तकों को गाँधी जी और नेहरू की जोड़ी के कारण पृथक होना पड़ा। डॉक्टर हेडगेवार ने उस समय की परिस्थिति भांपते हुए एक नयी राह बनानी प्रारम्भ की। वह एक ओर स्वतन्त्रता के आन्दोलन में सक्रिय बने रहे तो दूसरी ओर एक ऐसे संगठन की नींव रखी जिसे आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम से जाना जाता है। यह संगठन नागपुर में डॉक्टर हेडगेवार ने अपने घर पर कुछ राष्ट्रभक्त युवाओं को एकत्र करके गहन मन्थन के उपरान्त प्रारम्भ किया था। कुछ लोग अनजाने में कुप्रचार के भ्रम में पड़ कर पूछने लगते हैं कि संघ के लोग क्या स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सक्रिय थे। उन्हें नहीं पता कि डॉक्टर हेडगेवार बाल्यकाल में स्वतन्त्रता के आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। अन्तिम स्वांस तक स्वतन्त्रता के संग्राम के योद्धा रहे। अपने समय के सभी प्रमुख आन्दोलनों में सक्रिय रहे। गाँधी जी के नेतृत्त्व

में असहयोग आन्दोलन, डांडी यात्रा आन्दोलन में भागीदार बने। उन्हें दो बार एक-एक वर्ष के लिए सश्रम कठोर कारावास का दण्ड भी भुगतना पड़ा।

डॉक्टर हेडगेवार उन आदर्श सेनानियों में सम्मिलित रहे जिनके जीवन का परम ध्येय भारत को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के साथ रामराज्य की स्थापना करना था। देश को परम वैभवशाली भारत की गरिमा तक पहुँचाना था। भले यह लक्ष्य उनके जीवन काल में पूर्ण नहीं हो सका किन्तु जिस राष्ट्र भक्त संगठन की स्थापना उन्होंने की वह उसी दिशा में निरन्तर सक्रिय है। भारत के राष्ट्रभक्तों को यह अनुभूति गर्व से भर देती है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऐसी सारी दुविधाएं समाप्त करने को उद्यत है जो भारत को एक बार फिर से समर्थ, सक्षम और विश्वगुरु बनाने के मार्ग में अड़चन बनकर खड़ी हो सकती हैं।

संघ की स्थापना के सौ वर्ष की यात्रा पूरी होने वाली है। सन् 2025 की विजयादशमी को संघ अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लेगा। किसी राष्ट्र के जीवन में सौ वर्षों की अवधि बहुत छोटी होती है। संघ की स्थापना भारत माता की भक्ति के संकल्प के साथ हुई। संघ पूरे देश के निवासियों को उनकी भाषा, वेश, पन्थ, सम्प्रदाय, जाति उपजाति, प्रान्त अथवा निजी मान्यताओं की संकीर्णताओं में नहीं बाँधता। सबको एक रूप देखने की शक्ति संघ देता है। समता और ममता इस कालजयी संगठन का साधना मन्त्र है। इतना विराट ध्येय और इतनी विशाल संगठन शक्ति होते हुए भी कभी कोई प्रसिद्धि के लिए आकुल नहीं हुआ। हजारों हजार जीवनव्रती स्वयंसेवक अहर्निश ध्येय साधनारत हों और कभी कहीं विमति की कोई घटना तक सुनने को नहीं मिले ऐसा संघ में ही सम्भव है।

संघ के स्वयंसेवकों ने प्रारम्भ काल से अपप्रचार (कुप्रचार), कलुषित प्रचार, निन्दात्मक और द्वेष पूर्ण प्रचार की अनेक आँधियाँ सहन की हैं। कांग्रेस के नेतृत्व ने एक बार नहीं निरन्तर संघ को लक्ष्य करके प्रहार किये हैं। यह क्रम कांग्रेस और उससे पृथक हुए राजनीतिक संगठनों के लोगों ने कभी बन्द नहीं किये। संघ के पूज्य सरसंघचालक डॉक्टर मोहन भागवत के शब्दों में 'अपप्रचार का यथोचित उत्तर देकर प्रमाण सहित संघ तथा स्वयंसेवकों की भूमिका के बारे में तथ्यात्मक विवरण समाज के सामने प्रस्तुत होने ही चाहिए। संघ निर्माता डॉक्टर हेडगेवार का जीवन भी भारत की स्वतन्त्रता, एकता और अखण्डता तथा परम वैभव के लिए समर्पित रहा है। उनका जीवन एक देशभक्त का जीवन रहा। उन्हीं के मार्ग पर चलकर संघ के स्वयंसेवक लौकिक प्रसिद्धि से दूर रहकर भारत की स्वतन्त्रता और एकता की रक्षा के

डॉक्टर हेडगेवार बाल्यकाल में स्वतन्त्रता के आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। अन्तिम स्वांस तक स्वतन्त्रता के संग्राम के योद्धा रहे। अपने समय के सभी प्रमुख आन्दोलनों में सक्रिय रहे। गाँधी जी के नेतृत्त्व में असहयोग आन्दोलन, डांडी यात्रा आन्दोलन में भागीदार बने। उन्हें दो बार एक-एक वर्ष के लिए सश्रम कठोर कारावास का दण्ड भी भुगतना पड़ा।

लिए सतत सक्रिय रहते हैं। भारत की सर्वांगीण उन्नति के लिए संघ के स्वयंसेवक पूरे सामर्थ्य के साथ अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

राष्ट्रवाद विशेषतः सनातन हिन्दू संस्कृति को लेकर विधर्मी और अधार्मिक विचारों वाली शक्तियां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर बहुत आक्रामक रहती हैं। भारतीय सनातन जीवन यात्रा का आधार हजारों वर्षों से सार्वभौम, सर्वग्राह्य और सर्वस्पर्शी संस्कृति रही है। इसे ही सनातन संस्कृति के नाम से संसार जानता है। भारत के राष्ट्रवाद की बात जब भी कोई सनातनधर्मी करता है तो उसका भाव पूर्णतया सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही होता है। भारत की सनातन संस्कृति का विस्तार हजारों वर्षों की अवधि में जहाँ तक हुआ उसे ही भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संज्ञा मिली। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत के किन्हीं राजाओं के शौर्य प्रदर्शन और रक्तपात से नहीं हुआ। इसीलिए भारत की सांस्कृतिक पहिचान को सर्वस्पर्शी और सर्वग्राह्य कहा गया। विधर्मी आक्रान्ताओं ने जब आक्रमण किये तो ऐसा काल खण्ड आया जब उनको खदेड़ने या आत्मसात करने में भारत के शूरवीर और सक्षम समाज समर्थ सिद्ध हुआ। ऐसा समय भी भारत ने देखा जब कभी भीतरघात तो कभी अनीतिपूर्ण युद्ध के कारण आक्रान्ता सफल हुए। दासता के काल की बातें इतिहास में बहुत मिलती हैं। विवेचकों ने इनके बारे में हर तरह की बातें कही हैं।

वर्तमान कालखण्ड अनेक प्रकार की गम्भीर चुनौतियों से भरा है। भारतीय समाज को हर प्रकार से सामर्थ्यवान बनाना सबसे बड़ी चुनौती है। समाज के बीच भेद पैदा करने वाले संगठनों को दासता के काल के बाद भी बहुत सुविधाएं और अवसर मिलते रहे हैं। उनको विदेशों से धन का प्रवाह होने के प्रमाण मिलते रहे हैं। भारत में इनकी गहरी पैठ कराने वाले सक्रिय हैं। सत्ता के शिखर तक विदेशी पहचान वाले पहुँचते रहे हैं। राजनीति के खुले अखाड़े में कितने लोगों की भक्ति भारत में है और किनकी भारत से बाहर यह जानते हुए भी बहुत बार लोग मौन साध लेते हैं। यह भारत के राष्ट्रभक्तों की सद्गुण विकृति ही कही जाएगी।

भारत के विरुद्ध भारत के प्रति निष्ठावान लोगों को जाग्रत करना, उनको भारत माता की भक्ति के बोध से जोड़ना बड़ा काम है। यह एक या दस बीस वर्ष में पूरा होने वाला काम नहीं है। जिस देव भूमि भारत में देवों के प्रति आस्था पर कटाक्ष सुनकर भी लोग मौन खड़े रह जाते हैं। अपनी आस्था के मान बिन्दुओं के बचाव के लिए किसी और के उठकर आने की बाट जोहने लगते हैं उस देश में स्वभाषा, स्वदेश, स्वधर्म, स्वाभिमान के प्रति पूर्ण जाग्रति लाना कोई आसान लक्ष्य नहीं है। फिर भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठन शक्ति के साथ मिलकर खड़े होने से यह अवश्यम्भावी लगता है। भारत माता का अन्न जल परकीय शक्तियां चुराती रहें। ऐसी शक्तियाँ जिनकी आस्था इस भूमि के प्रति कभी हो ही नहीं सकती। उनको सामर्थ्यवान भारतीय समाज ही सही मार्ग पर लाकर एक दिन खड़ा करेगा। ■

आत्मनिर्भरता : तरक्की की पहली सीढ़ी

डॉ. पूनम कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
आईएमएस, गाजियाबाद

आज पूरे विश्व में भारत की तस्वीर एक आत्मनिर्भर देश के रूप में उभरती नजर आ रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी 'आत्मनिर्भर भारत' वाक्यांश का उपयोग भारत के आर्थिक विकास को संदर्भित करने के लिए करते आये हैं। विश्व गुरु के रूप में भारत आज जी-20 समिट का नेतृत्व कर रहा है यह आत्मनिर्भरता का ही जीता जागता साक्षात उदाहरण है।

आत्मनिर्भरता का तात्पर्य स्वावलम्बन से है। एक समाज, राज्य और देश को आत्मनिर्भर तब कहा जा सकता है जब वह स्वावलंबित होगा। आत्मनिर्भरता को सरल अर्थों में हम समझ सकते हैं, यह वह चिड़िया जो जन्म लेने के बाद जैसे ही होश संभालती है, वह अपना दाना-पानी और घर के लिए किसी का इंतजार नहीं करती बल्कि मेहनत और काबिलियत से अपने जरूरतों को पूरा करती है।

आज पूरे विश्व में भारत की तस्वीर एक आत्मनिर्भर देश के रूप में उभरी नजर आ रही है। प्रधानमंत्री मोदी जी भी "आत्मनिर्भर भारत" वाक्यांश का उपयोग भारत के आर्थिक विकास को संदर्भित करने के लिए करते आये हैं। विश्व गुरु के रूप में भारत आज जी-20 समिट का नेतृत्व कर रहा है यह आत्मनिर्भरता का ही जीता जागता साक्षात उदाहरण है।

जब कोई देश विकास की राह पर चलता है तो इनके पीछे कई ऐसे लोगों के भी योगदान छुपे होते हैं जिन्हें हम अक्सर अनदेखा तो कर देते हैं पर आज उन्हीं लोगों के बदौलत भारतवर्ष सशक्त देशों की श्रेणी में शुमार है। आज हमारे आस पड़ोस कई उदाहरण हैं जिन्होंने जीरो से हीरो बनने तक बहुत मेहनत की और जब वो

मेहनत ने रंग दिखाया है और पूरी दुनिया ने ताली बजायी है।

ऐसे ही कुछ उदाहरणों में शुमार एक बेलगंज, गया के राज नामक एक किसान है, जिसे हमेशा अनियमित बिजली की आपूर्ति के कारण खेतों में सिंचाई की समस्या का सामना करना पड़ता था और बहुत बार इसी कारण फसल बर्बाद भी हो जाती थी। समाधान खोजने के लिए दृढ़ संकल्प लेकर राज ने अक्षय ऊर्जा स्रोतों पर शोध करना शुरू किया। परिणामस्वरूप, सीखने और प्रयोग करने के कई महीनों के बाद, उसने कम लागत वाली सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली तैयार की जो उसके लिए नींव का पत्थर साबित हुई। सिचाई की इतनी अनुकूलित व्यवस्था देख अन्य किसानों ने भी राज की इस सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली का उपयोग करना शुरू किया। राज का यह जज्बा बताता है किसानों के इस देश की जड़ों में भी आत्मनिर्भरता का बीज पनपता है।

इसी तरह ओडिशा के एक दूरदराज के आदिवासी क्षेत्र में, प्रकाश नाम के एक युवक ने बांस आधारित उत्पादों की क्षमता को आय के स्रोत के रूप में देखा। उन्होंने बांस शिल्प का अपना व्यवसाय शुरू किया, जिसमें टोकरी, फर्नीचर और सजावटी सामान जैसे उत्पाद बनाए गए। कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ, प्रकाश का व्यवसाय फलता-फूलता गया, और अब वह कई स्थानीय कारीगरों को रोजगार देते हैं, जो

अपने समुदाय के आर्थिक विकास में योगदान देते हैं।

बिहार के एक गांव में, महिलाओं के एक समूह ने एक स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बनाने के लिए एक साथ आए। उन्होंने सामूहिक रूप से छोटी मात्रा में धन की बचत करके शुरुआत की और फिर उन फंडों का उपयोग विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों के लिए सदस्यों को माइक्रोलोन प्रदान करने के लिए किया। जैसे-जैसे एसएचजी बढ़ता और सफल होता गया, उन्होंने कौशल विकास कार्यक्रमों, हस्तशिल्प उत्पादन और यहां तक कि एक छोटे से गांव के बैंक को शामिल करने के लिए अपनी पहल का विस्तार किया। यह सशक्त भारत की आत्मनिर्भर महिलाओं की छवि दर्शाता है। इन महिलाओं ने खुद को तो आत्मनिर्भर बनाया ही साथ ही साथ कई महिलाओं की प्रेरणा की स्त्रोत भी बनी है।

बिजली की पहुंच नहीं रखने वाले एक दूरदराज के गांव, सुंदरपुर के ग्रामीणों ने बिजली आपूर्ति के इस मामलों को अपने हाथों में लेने का फैसला किया। उन्होंने एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया और सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकी के बारे में सीखा। सरकारी सब्सिडी के समर्थन से, उन्होंने अपने घरों की छतों पर सौर पैनल स्थापित किए। इस पहल ने न केवल गांव को बिजली प्रदान की, बल्कि ग्रामीणों को अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में आत्मनिर्भर होने के लिए सशक्त बनाया।

बिजली की पहुंच नहीं रखने वाले एक दूरदराज के गांव, सुंदरपुर के ग्रामीणों ने बिजली आपूर्ति के इस मामलों को अपने हाथों में लेने का फैसला किया।उन्होंने अपने घरों की छतों पर सौर पैनल स्थापित किए। इस पहल ने न केवल गांव को बिजली प्रदान की, बल्कि ग्रामीणों को अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में आत्मनिर्भर होने के लिए सशक्त बनाया।

चंद्रयान-3 मिशन में देश की सफलता का बिगुल यह बताता है आज चाँद पर घर का सपना केवल सपना नहीं बल्कि बहुत जल्द हकीकत बन सकती है, बस जरूरत है तो आत्मविश्वास को बनाए रखने की। आत्मनिर्भरता का पहला पड़ाव तो देश ने इसकी सफल लाँचिंग के साथ ही पार कर लिया था।

आज कई शैक्षिक संस्थान शिक्षा में आत्मनिर्भरता की दिशा में काम कर रहे हैं। कुछ शिक्षक स्थानीयकृत और सस्ती शिक्षण सामग्री, ओपन-सोर्स शैक्षिक प्लेटफार्मों और डिजिटल टूल विकसित कर रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गुणवत्ता शिक्षा उनकी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी के लिए सुलभ है। यह आत्मनिर्भर देश की नई तस्वीर बन कर उभरी है जो वर्षो तक पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को उन्नत और स्वावलंबित बनाएगा।

ये कहानियां आत्मनिर्भरता की भावना को स्पष्ट करती हैं, साथ ही उद्यमिता और शिक्षा से लेकर कृषि और सामुदायिक विकास तक जीवन के विभिन्न पहलुओं में आत्मनिर्भरता, नवाचार और दृढ़ संकल्प के महत्व पर जोर देती हैं। यह बयां भी करती है हमारे देश का बिना पढ़ा लिखा किसान से लेकर एक उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक तक साईंटिफिक सोच रखता है और अपने मेहनतकश इरादों के साथ विश्व के मानचित्र में छाने की काबिलियत भी रखता है। आत्मनिर्भरता एक सोच है जिसकी शुरुआत सर्वप्रथम खुद से होती है। तरक्की का पहला पड़ाव आत्मनिर्भर बनना है और यह अपने अंदर के आत्मविश्वास और नियमित मेहनत से ही संभव है। ■

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के उपाय

डॉ. आशीष कुमार
शिक्षाविद

प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का संबंध कमजोर होना जलवायु परिवर्तन की मुख्य वजह है। विकास के विवेकहीन मानकों ने ऐसी परिस्थितियां पैदा की हैं कि जल, जंगल, जमीन, वायु, आकाश, अंतरिक्ष में जीवन के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। पृथ्वी का बढ़ता तापमान, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, ओजोन परत का कम होना, सूखा और बाढ़ से जूझते लोग, पिघलते ग्लेशियर, दरकते पहाड़ पर्यावरण संकट के परिणाम हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व में खाद्यान्न संकट पैदा हो रहा है। संकट को समझने के लिए विश्व के लगभग सभी देश एक मंच पर आ रहे हैं, इसके वास्तविक कारणों और समाधान के लिए गंभीर प्रयास करने होंगे। भारतीय वैदिक साहित्य में जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान सूत्र दिए हुए है, जिनको अपनाकर इस धरा को बचाया जा सकता है।

भारतीय पर्यावरण संरक्षण अधिनियम-1986 में पर्यावरण की परिभाषा में कहा गया है कि पर्यावरण में जल, वायु और भूमि तथा इनमें विद्यमान अन्तर्सम्बन्ध शामिल हैं। पर्यावरण का जो भी संकट आज दिख रहा है, उसके प्रति सबसे ज्यादा जवाबदेही विकास की उस अवधारणा की है, जिसके अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ही विकास है। कंक्रीट के जंगल, उद्योग, माइनिंग और उससे होन वाली आय ही उसके प्रमुख पैमाने हैं।

प्रकृति से प्राप्त होने वाले संसाधनों का यदि मानव संतुलित प्रयोग करता है तो उसे ये संसाधन अनंत काल तक मिलते रहेंगे। इसे विज्ञान की भाषा में सस्टेनेबल डेवेलपमेंट कहा जाता है। इसके मुताबिक पृथ्वी से उतना ही लिया जिसकी प्रकृति भरपायी कर सके या पुनः उत्पन्न कर सके। भावी पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की जिम्मेदारी उसके प्रयोगकर्ताओं की है। प्रकृति के संरक्षण के लिए वैदिक परंपरा में अनके सूत्र दिए हुए हैं।

प्रकृति के संरक्षण और स्तुति में वैदिक ऋषियों ने आर्ष साहित्य में लिखा है। उन्होंने पृथ्वी साक्षात् माता कहा है- **'विश्वस्वम् मातरमोषधीनाम'** अथर्ववेद के भूमि सूक्त में जीव और प्रकृति के नैतिक सहचर्य के बारे में बेहद खूबसूरती से बताया गया है।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यक्षः पृथ्वी धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युः लोकं पृथ्वी कृणोतु।

शतपथ ब्राह्मण में वनस्पतियों को 'पशुपति' कहा गया है, जो पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले तत्व 'कार्बन डाइऑक्साइड' को भगवान शिव की तरह 'विषपान' कर जाते हैं।

यजुर्वेद में में वन संरक्षण के बारे में लिखा है। उनकी उपासना के बारे में लिखा गया है। **वनानां पतये नमः। वृक्षणां पतये नमः। औषधीनां पतये नमः।**

सस्टेनेबल यानी टिकाउ विकास के आधुनिक सिद्धांत को इन वैदिक पंक्तियों में खोजा जा सकता है-

यते मध्यं पृथ्वी यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।

तासु नो धेहि अभि नः पवस्य माता भूमिःपुत्रोहं पृथ्वी व्याः।

जिस प्रकार माता के दूध से नवजात शिशु को पोषण प्राप्त होता है, उसी प्रकार यह पृथ्वी अपने पुत्रों को बल और शक्ति प्रदान करती है। वैदिक ऋषि पृथ्वी से निवेदन करते है कि हे पृथ्वी! तुम्हारे शरीर से निकलने वाली शक्ति की धाराएं हैं, उनके साथ हमे संयुक्त करो। इस अच्छा सहचर्य का उदाहरण कहां हो सकता है।

वेदों में पृथ्वी को नुकसान न पहुंचाने के लिए कहा गया है। पृथ्वी जगत् के प्राणियों के स्वास्थ्य रक्षा के लिए औषधियों को संभाल कर रखने के कारण ही पृथ्वी को 'गृभिः औषधीनाम' भी कहा गया है। यजुर्वेद में पृथ्वी लोक और अंतरिक्ष लोक के संरक्षण के बारे में कहा गया है।

पृथ्वीं द्वंह पृथ्वी माहिसीः पन्यर्जुः।

अंतरिक्षं द्वंह अंतरिक्षं मा हिंसी। यजु१४/१२

दिवंद्वंह, दिव मा हंसी॥ यजु १५/६४

इन वैदिक ऋचाओं में मानव से प्रकृति संरक्षण की अपेक्षा की गई है। वेदों के अनुसार प्रकृति का अस्तित्व पंचभूत तत्वों पर टिका हुआ है। यदि इन तत्वों में असंतुलन पैदा हुआ तो समस्या हो सकती है। इन पंच तत्वों के बीच आपसी समन्वय-सामंजस्य से यह ब्रह्मांड टिका है। वैदिक साहित्य में इसे 'ऋत' कहा गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि-

परिविश्वा भुवनान्यायं।

ऋतस्य तन्वु विततं द्वशेकमे।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति उपासना एक अहम हिस्सा है। विश्व के अन्य देशों को वैदिक सूत्रों से प्रकृति संरक्षण के सूत्रों को खुले मन से स्वीकार करना चाहिए। ■

संतुलित आहार ही है स्वस्थ जीवन का आधार

डॉ. ओमेन्द्र पाल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, बाल रोग विभाग
इंस्टिट्यूट ऑफ आयुष मेडिक साइंसेज, लखनऊ

मनुष्य द्वारा ग्रहण किये गए खाद्य पदार्थ, जो शरीर का पोषण करे, वह आहार कहलाता है। आयुर्वेद में आहार को महाभैषज्य कहा गया है जिसका तात्पर्य है कि आहार औषध है। संतुलित एवं प्रशस्त आहार बीमारियों की रोकथाम तो करता ही है, साथ ही उनके इलाज को सरल बनाता है। कोरोना कालखंड में हमने यह देखा कि इस भयावह बीमारी से वही जीत पाया जिसने स्वस्थ जीवन शैली को अपनाया। वर्तमान में संक्रामक बीमारियों की रोकथाम और उपचार में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान सफल रहा है। परन्तु अस्वास्थ्यकर आहार विहार से होने वाले गैर संचारी रोग तेजी से बड़ी जनसँख्या को ग्रसित कर रहे हैं। मोटापा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, थायराईड, महिलाओं में पीसीओडी आदि विकार अस्वास्थ्यकर आहार और शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रहे हैं।

अस्वास्थ्यकर जीवन शैली : घर का बना सादा भोजन न करके घर में या बाहर का ज्यादा तला भुना खाना। मैदा, ज्यादा नमक और चीनी से बने खाद्य पदार्थों का उपभोग करना। प्रतिदिन व्यायाम न करना एवं नगण्य शारीरिक गतिविधि।

क्या खाएं : सतुलित आहार - आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संतुलित आहार में सभी पोषक तत्व जैसे कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन, वसा, जल, मिनरल्स एवं विटामिन्स उचित मात्रा में होने चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार षड्रस युक्त आहार दोषों को साम्यावस्था में रखते हुए उत्तम धातु पोषण करता है, इसे ही संतुलित आहार कहते हैं। सैद्धांतिक रूप से सभी पोषक तत्वों की आयु के अनुसार दैनिक मात्रा एवं आहार में उसके अंश के विस्तृत वर्णन द्वारा आहार की समझ को जटिल बनाने के अपेक्षा हम यहाँ ऐसी सामान्य आहार विधि कि चर्चा करेंगे, जो हमें स्वस्थ एवं सुपोषित रखे। आहार द्वारा हमें पर्याप्त पोषण मिले इसके लिए दो बातें अत्यंत आवश्यक हैं। एक तो अनाज, दाल, सब्जी और फल के रूप में सभी पोषक तत्त्व आहार में रहें और दूसरा इनके द्वारा हमें पूर्ण पोषण मिले, इसलिए हम भोजन समय पर करें।

नमक के रूप में सोडियम का अधिक सेवन और पोटेशियम का अपर्याप्त सेवन उच्च रक्तचाप का कारण बन हृदयाघात एवं स्ट्रोक का खतरा पैदा करतें हैं। सामान्यत: दिन भर में ५ ग्राम से अधिक नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिए और सामान्य नमक की अपेक्षा सैन्धव लवण का प्रयोग श्रेयस्कर है। पोटेशियम नमक के नकारात्मक प्रभाव को कम करता है। ताजे फल विशेषकर केला और सब्जियों में यह समुचित मात्रा में पाया जाता है। इनको अपने आहार में प्राथमिकता दें।

रीजनल और रीजनल खाद्य पदार्थों का प्रयोग : उन फल एवं सब्जियों का प्रयोग करें जो स्थानीय हों एवं उस मौसम में ही पायी जाती हो। किसी मौसम में जिस तत्व की शरीर को आवश्यकता होती है, प्रकृति उस मौसम में पाए जाने वाले खाद्य पदार्थों में उसे प्रचुरता से उपलब्ध करा देती है। इसी प्रकार क्षेत्र विशेष में पाए जाने वाले आहार द्रव्य वहां रहने वाले लोगों के लिये आवश्यक पोषक तत्वों से युक्त होते हैं एवं उनके शरीर को सात्म्य होते हैं।

श्रीअन्न भी हों हमारे भोजन का अंग: मोटे आनाज जैसे ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी आदि को अब श्रीअन्न कहा जाता है। गेहूं के साथ साथ इनके आटे की रोटी या मुद्दे (दक्षिण भारत का आहार) का सेवन भी करना चाहिए। ऊर्जा के साथ साथ ये ओमेगा 3, कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, आयरन आदि महत्वपूर्ण पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। कुछ

सावधानी भी इनके प्रयोग में रखनी चाहिए, जैसे रुक्ष होने के कारण इन्हें घी के साथ खाना चाहिए, वात प्रकृति या अत्यधिक दुबले-पतले व्यक्तियों को कम खाना चाहिए। नियमित अंतराल पर इनका प्रयोग लाभकारी है परन्तु प्रतिदिन व हर भोजन में इनके प्रयोग से पाचन तंत्र पर दबाव पड़ता है।

आहार विधान : समय पर भोजन एवं जठराग्नि के सापेक्ष भोजन करना चाहिए अर्थात् जब भूख लगे तब खाना और जितनी भूख लगे उतना खाना। इससे खाए हुए भोजन का पाचन और अवशोषण आतों द्वारा ठीक प्रकार से होता है। अपना पेट आधा भोजन से भरें, एक चौथाई पानी से और एक चौथाई वायु के लिए खाली छोड़ें।

क्या न खाएं : सैचुरेटेड या ट्रांस फैट शरीर के लिए नुकसानदेह होती है। यह वसा का वह रूप है जो सामान्य तापमान में जम जाता है। अतः यह एलडीएल (हानिकारक) कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। यह धमनियों में जमा होकर उच्च रक्तचाप और हृदयरोग का खतरा बढ़ाते हैं। मांस वसा, पाम आयल, वनस्पति तेल, मक्खन आदि में यह होता है और बाजार के तले-भुने खाद्य पदार्थों में इसका प्रयोग किया जाता है। इनका सेवन बिल्कुल न करें। अनसैचुरेटेड फैट अखरोट, जैतून, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि के तेल में होती है और अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाती है, इसका सेवन करना चाहिए।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संतुलित आहार में सभी पोषक तत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, जल, मिनरल्स एवं विटामिन्स उचित मात्रा में होने चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार षड्रस युक्त आहार दोषों को साम्यावस्था में रखते हुए उत्तम धातु पोषण करता है, इसे ही संतुलित आहार कहते हैं।

इसी प्रकार मुक्त शर्करा अर्थात् वह शुगर जो हम बाहर से खाने की चीजों में मिलाते हैं, का प्रयोग कम करना चाहिए। चीनी सल्फर एवं अन्य रासायनिक द्रव्यों से प्रसंस्कृत (प्रोसेस्ड) होने के कारण अत्यंत हानिकारक होती है अतः इसके स्थान पर गुड का प्रयोग लाभकारी है।

प्रोसेस्ड और रिफाइंड खाद्य पदार्थ: प्रोसेस्ड खाद्य जैसे फास्ट फूड एवं जंक फूड खाना आजकल बच्चों की ही नहीं बल्कि बड़ों की भी पहली पसंद है। पिज्जा, बर्गर, नूडल्स आदि आहार पोषण रहित एवं ट्रांस फैट जैसे हानिकारक तत्वों से युक्त होते हैं, इसलिए इन्हें खाने से बचें।

इसी प्रकार रिफाइंड पदार्थ जैसे मैदा, चीनी और रिफाइंड तेल का प्रयोग शरीर के लिए हानिकरक है। इनके स्थान पर चोकर युक्त आटा, गुड और प्राकृत तेल जैसे सरसों, जैतून, सोयाबीन आदि के तेल का उपयोग करें।

सोडियम एवं पोटेशियम का उचित सेवन : नमक के रूप में सोडियम का अधिक सेवन और पोटेशियम का अपर्याप्त सेवन उच्च रक्तचाप का कारण बन हृदयाघात एवं स्ट्रोक का खतरा पैदा करतें हैं। सामान्यतया दिन भर में 5 ग्राम से अधिक नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिए और सामान्य नमक की अपेक्षा सैन्धव लवण का प्रयोग श्रेयस्कर है। पोटेशियम नमक के नकारात्मक प्रभाव को कम करता है। ताजे फल विशेषकर केला और सब्जियों में यह समुचित मात्रा में पाया जाता है। इनको अपने आहार में प्राथमिकता दें।

आहार का चिकित्सीय पथ्यापथ्य के रूप में औषधीय प्रयोग : चिकित्सा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए एवं व्याधि की गंभीरता को कम करने में पथ्य सेवन एवं अपथ्य के त्याग का अत्यधिक महत्त्व है। पथ्य वह है जो लाभकारी है और अपथ्य वह है जो हानिकारक है। उदाहरण के लिए मधुमेह (डायबिटीज) में जौ, चना, मूंग, अरहर, परवल, करेला, जामुन, प्याज, लहसुन पथ्य हैं और नया चावल, दही, मिष्ठान, आलू व अन्य कंद, मांस अपथ्य है। गृहणी (कोलायटिस) में गेहूं (मैदा), डेरी पदार्थ (छाछ दही छोड़कर), कटहल, शकरकंद आदि अपथ्य और छाछ, श्री अन्न, जीरा, धनिया, काली मिर्च का प्रयोग पथ्य है। इसी प्रकार अम्लपित्त (गैस्ट्राइटिस) - गरिष्ठ भोजन जैसे मांस, छोला राजमा, उड़द, मदिरा अपथ्य है। शीत आहार जैसे दुग्ध, पेठा, आवंला, परवल, लौकी यहाँ पथ्य है।

इस प्रकार व्याधि अवस्था में पथ्यापथ्य का पालन रोगों की जटिलता को तो कम करते हैं इसके साथ ही उनकी चिकित्सा को आसान भी कर देते हैं। आधुनिक वातावरण में जीवन शैली सम्बंधित विकारों से ग्रसित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिसका मुख्य कारण दोषपूर्ण आहार है। यदि आयुर्वेदोक्त आहार विधि विधान का पालन किया जाये तो निश्चित रूप से इन बीमारियाँ से बचे रहेंगे, हमारा शरीर स्वस्थ एवं ऊर्जा से भरपूर रहेगा। ■

संघ को समझना है तो...

विजयादशमी के दिन सन् 1925 में स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दुनिया भर में अपनी तरह का अनूठा संगठन है। राष्ट्रीय, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में समरस इस विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन की क्षमताओं को लेकर सदैव ही एक कौतुहल बना रहता है। रा.स्व.संघ अर्थात संघ आखिर क्या करता है, कैसे करता है, वह कैसे चलता है, कौन चलाता है- यह सब समझने की ललक हमेशा से रही है। जो कुछ समझ पाते हैं, वे इसके और निकट आकर राष्ट्रकार्य में जुट जाते हैं। जो दूर से ही आशंकित रहते हैं, वे संघ को एक गुप्त संगठन बताकर तरह-तरह की आशंकाएं व्यक्त करते रहते हैं और भ्रांतियां पैदा करते हैं। संघ को निकट से समझने की यह कोशिशें उन अवसरों पर और बढ़ जाती हैं जब संघ विचार से प्रेरित व्यक्ति और दल सत्ता प्रतिष्ठान के शीर्ष पर पहुंच जाते हैं।

पिछले एक दशक में संघ को समझने और संघ की ओर से समझाने के प्रयासों की कड़ी में एक महत्वपूर्ण पुस्तक सामने आई है- यशस्वी भारत। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छठे और वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत की 2022 में प्रकाशित यह पुस्तक वस्तुतः पिछले दशक में दिए गए कुछ महत्वपूर्ण भाषणों का संकलन है। विशेषकर इसमें सितम्बर, 2018 में डॉ. मोहन भागवत द्वारा दिए गए वे दो भाषण और प्रश्नोत्तर भी संकलित हैं जो उन्होंने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में देश के सुविख्यात और विशिष्ट जनों के बीच दिए थे। हालांकि यह संघ के विचार को स्पष्ट करने का ही एक प्रयास था। क्योंकि संघ प्रमुख अपने लगभग सभी संबोधन में यह बार-बार कहते हैं कि "संघ को समझना है तो संघ में आइए"।

यशस्वी भारत की प्रस्तावना लिखते हुए वरिष्ठ चिंतक व विचारक मा.गो.वैद्य भी कहते हैं कि संघ को समझना आसान नहीं है। "गगनं गगनाकारं, सागरः सारोपमः, रामरावणोर्युद्धं रामरावमयोरिव।।" श्लोक का उल्लेख करते हुए वह कहते हैं कि किसी और उपमा से संघ की तुलना नहीं की जा सकती और न ही किसी दूसरे उदाहरण से संघ को समझा जा सकता है। संघ तो संघ जैसा ही है। इसको ठीक से समझने और उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति करने के लिए संघ की शाखा में जाना ही होगा।

सवाल यह भी उठते हैं कि संघ समाज के लिए क्या करता है? वह समाज में एक संगठन है या सम्पूर्ण समाज का संगठन है? सम्पूर्ण समाज का संगठन है तो फिर केवल हिन्दू समाज की ही चर्चा क्यों करता है? संघ और हिन्दुत्व, संघ और राष्ट्रीयता, संघ और समाज, संघ का दृष्टिकोण और विचार, संघ में

पुस्तक का नाम- यशस्वी भारत
प्रकाशक- प्रभात पेपरबैक्स
4/19, आसफ अली रोड़,
नई दिल्ली- 110002
मूल्य- 300 रुपए पृष्ठ-286

महिलाएं आदि आदि ऐसे अनेक सवाल हैं जिनके जवाब इस पुस्तक में बहुत ही सहज और सरल भाषा में दिए गए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस अर्थात विजयादशमी पर दिए गए मोहनजी भागवत के विशेष संबोधन, संघ विचार की पत्रिकाओं को कुछ विशेष अवसरों पर दिए गए विस्तृत साक्षात्कारों के सार तत्व, कुछ अन्य विशेष अवसरों सहित दिल्ली में तीन दिवसीय समारोह में उनके वक्तव्य और प्रश्नोत्तर से इन सारे सवालों का उत्तर आसानी से प्राप्त हो जाता है।

मा.गो. वैद्य बहुत स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि संघ हिन्दुओं का संगठन करता है। यहां हिन्दू का अर्थ हिन्दू धर्म से है पर संघ विचार में हिन्दू धर्म की अवधारणा बहुत व्यापक है। हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुए वे स्पष्ट करते हैं कि यह कोई पूजा पद्धति, पंथ और सम्प्रदाय, किसी ग्रंथ-पुस्तक या साकार-निराकार अवतार की उपासना से जुड़ा हुआ नहीं है। हिन्दू धर्म तो इतना व्यापक है कि वह आस्तिक-नास्तिक से लेकर वेदों को प्रमाण ने मानने वाले जैन और बौद्ध समाज सहित मूर्तिपूजा को अस्वीकार करने वाले आर्य समाज के विचार को ही नहीं समाहित करता है बल्कि हिन्दू धर्म की व्यापक अवधारणा को यदि ईसाई और इस्लामी मत वाले भी मान्यता देंगे तो वे भी इसकी परिधि में आ जाएंगे।

"यशस्वी भारत" के 17 अध्यायों का यदि अवगाहन किया जाए तो कुछ बातें साफ तौर पर उभरकर आती हैं। वह यह है कि संघ में आकर ही संघ को समझा जा सकता है। संघ विविधतापूर्ण समाज को संगठित करने का काम करता है। समाज को संगठित करने में संघ की प्राथमिकता चारित्र्य सम्पन्न व्यक्ति निर्माण से है। यह चारित्र्य सम्पन्न संगठित समाज भी दुर्बल नहीं होना चाहिए, अन्यथा वह अपनी और अपने राष्ट्र की रक्षा नहीं कर पाएगा। इसलिए सब प्रकार से समर्थ व सशक्त समाज की रचना करना संघ का उद्देश्य है। हिन्दू धर्म और समाज के संगठन के साथ ही संघ विचार में राष्ट्रीयता का भाव सर्वोपरि है। संघ किस प्रकार से समर्थ-सशक्त, बल-बुद्धि से सम्पन्न हिन्दू समाज को संगठित कर राष्ट्रीयता के आधार पर परस्पर संवाद के माध्यम से विश्व बंधुत्व का संदेश देते हुए भारत के परम वैभव से विश्वगुरू बनाने के लिए निरन्तर कार्य करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा है, यह यदि समझना हो तो "यशस्वी भारत" अवश्य पढ़ें। ■ (जितेन्द्र)

ग्रेटर नोएडा शार्ट फिल्म फेस्टिवल की चित्रमय झलक

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास एवं गलगोटिया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रेटर नोएडा शार्ट फिल्म फेस्टिवल का गत 26 व 27 अगस्त को आजोयन बेहद स्मरणीय बना। इसमें देश भर से प्राप्त लगभग 200 लघु फिल्मों में से चयनित 66 लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस आयोजन में सम्मिलित हुए भाजपा सांसद एवं प्रसिद्ध अभिनेता श्री मनोज तिवारी, महाभारत के युधिष्ठिर के रूप में विख्यात अभिनेता गजेन्द्र चौहान, पटकथा लेखक और निदेशक श्री आकाश आदित्य लामा, मशहूर अभिनेत्री श्रीमती सुप्रिया रैना शुक्ला ने अपने-अपने मास्टर क्लास और कार्यशालाओं का भी आयोजन किया। एनसीईआरटी के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर जगमोहन सिह राजपूत, उत्तर प्रदेश सरकार के विशेष सचिव श्री अमरनाथ उपाध्याय, फिल्म समीक्षक श्री विष्णु शर्मा, श्रीमती नीतू कुमार और श्रीमती क्षमा त्रिपाठी ने भी विभिन्न सत्रों को संबोधित किया। रा.स्व.संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री आलोक कुमार, उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड के प्रचार प्रमुख श्री कृपाशंकर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री पदम सिंह ने भी अपने विचार रखे। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए और सहभागियों को सम्मानित किया गया। इस आयोजन के अध्यक्ष श्री सुनील कुमार त्यागी, संयोजक श्री सुभाष तिवारी एवं सह संयोजक प्रो. आज्ञाराम पांडेय रहे। यहां प्रस्तुत हैं उस आयोजन की चित्रमय झलकियां-

विशेष समाचार

21 अगस्त : श्रीराम मंदिर के लिए अखाड़ा-संत समाज 14 से 26 जनवरी का समय आरक्षित रखें - चंपत राय।

22 अगस्त : वाराणसी - बाबा विश्वनाथ धाम को मिला तीन गोल्फकार्ट, बुजुर्ग, दिव्यांग और महिलाओं श्रद्धालुओं को मिलेगी सुविधा।

23 अगस्त : चंद्रमा पर उतरा भारत का चंद्रयान, चांद के साउथ पोल पर उतरने वाला भारत पहला देश है।

24 अगस्त : ओंकारेश्वर से अयोध्या पहुंचे भगवान नर्मदेश्वर, रामलला मंदिर परिसर में होगी शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा।

25 अगस्त : मेरठ-बिजनौर और तीन अन्य जिलों से होकर गुजरने वाले हस्तिनापुर अभयारण्य का नाम बदल कर बारहसिंगा अभयारण्य करने के शासनादेश जारी, केंद्र सरकार की भी मिली स्वीकृति।

26 अगस्त : दुर्गा पूजा सिर्फ धार्मिक आयोजन नहीं, विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाला धर्मनिरपेक्ष माध्यम भी है -कलकत्ता हाई कोर्ट।

27 अगस्त : योग तीर्थ नगरी ऋषिकेश में हटाई गईं दो मजारें, किसी में भी नहीं मिले मानव अवशेष।

28 अगस्त : जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने बुडापेस्ट में विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 में जीता गोल्ड।

29 अगस्त : श्रीकृष्ण जन्मस्थान के पास रेलवे की जमीन से अतिक्रमण हटाने पर रोक लगाने से सुप्रीम कोर्ट का इनकार।

30 अगस्त : रक्षाबंधन पर कन्याओं को सीएम योगी का बड़ा उपहार, अब कन्या सुमंगला के लाभार्थियों को 15 हजार की जगह मिलेंगे 25 हजार।

31 अगस्त : राजस्थान में नहीं थम रहा साधु संतों की हत्या का सिलसिला, पहले संत हरिराम दास और अब महंत सियाराम दास की हुई हत्या।

1 सितम्बर केंद्र सरकार ने 'एक देश एक चुनाव' को लेकर बड़ा कदम उठाते हुए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की।

2 सितम्बर : सूर्य के पास पहुंचेगा भारत, आदित्य एल-1 का हुआ सफल प्रक्षेपण।

3 सितम्बर : सनातन से प्रभावित होकर डॉक्टर ने इस्लाम त्याग अपनाया हिंदू धर्म, अब जमात से जान को खतरा, पुलिस महानिदेशक से लगाई सुरक्षा की गुहार।

4 सितम्बर : राष्ट्रधर्म पत्रिका के पूर्व संपादक एवं विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व केंद्रीय मंत्री 78 वर्षिय वीरेश्वर द्विवेदी का निधन।

5 सितम्बर : 'उदयनिधि स्टालिन ने दी हेट स्पीच', 262 बड़ी हस्तियों ने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ को लिखी चिट्ठी, सुप्रीम कोर्ट से दखल देने की मांग।

6 सितम्बर : देश की पहली सोलर सिटी बना एमपी का सांची शहर, मुख्यमंत्री ने किया लोकार्पण।

7 सितम्बर : दिल्ली- भारत मंडपम में नटराज की सबसे ऊंची मूर्ति, 7 महीने में हुई तैयार।

8 सितम्बर : ब्रिटेन से भारत वापस आएगा छत्रपति शिवाजी महाराज 'बाघ नख', इसी खंजर से शिवाजी महाराज ने किया था अफजल खान का वध।

9 सितम्बर : जी-20 नेताओं ने नई दिल्ली घोषणा को स्वीकार किया, समावेशी विकास, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य आपात स्थितियों के लिए भविष्य की तैयारी पर जोर। भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन में वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन की शुरूआत की।

10 सितम्बर : जी- 20 के लिए आए ब्रिटेन के पीएम ऋषि सुनक को हिंदू होने पर है गर्व, अक्षरधाम मंदिर में पत्नी अक्षता मूर्ती संग किये दर्शन।

11 सितम्बर : भारत और दक्षिण कोरिया संबंधों की 50वीं वर्षगांठ, कोरियन पॉप संगीत समारोह के यूपी में होंगे आयोजन।

12 सितम्बर : उत्तराखंड के 117 मदरसों में भी पढ़ाई जाएगी संस्कृत, लागू होगा एनसीईआरटी का पाठ्यक्रम।

13 सितम्बर : डीजल वाहनों और जेनसेट पर अतिरिक्त जीएसटी लगाने का कोई प्रस्ताव नहीं -नितिन गडकरी।

14 सितम्बर : आतंकी मुजफ्फर और फैसल को फांसी की सजा, कलावा देखकर और हिंदू पहचान होने पर शिक्षक रमेश बाबू शुक्ला की गोली मारकर की थी हत्या।

15 सितम्बर : संयुक्त अरब अमीरात ने नक्शा जारी करके माना पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भारत का अभिन्न अंग।

16 सितम्बर : पुणे में अखिल भारतीय समन्वय बैठक संपन्न, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य ने कहा समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने का प्रयास करेंगे संघ प्रेरित संगठन।

17 सितम्बर : पीएम मोदी ने विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर पीएम विश्वकर्मा योजना का किया शुभारम्भ, शिल्पकारों और हुनरमंदों को मिलेगी नई पहचान।

18 सितम्बर : कर्नाटक के होयसला मंदिरों का समूह यूनेस्को की विरासत सूची में शामिल भारत के पास कुल 42 विश्व धरोहर हैं, जिसमें 34 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित संपत्ति शामिल है।

19 सितम्बर : लोकसभा में महिला आरक्षण बिल पेश, 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान, 15 साल की है समय सीमा महिला आरक्षण बिल के कानून बनने के बाद लोकसभा में महिला सदस्यों के लिए 181 सीटें आरक्षित हो जाएंगी

20 सितम्बर : वायु सेना की हथियार प्रणाली शाखा को पहली बार सरकार से मिली मंजूरी भारत ने कनाडा में भारतीय नागरिकों को किया अलर्ट, अत्यधिक सावधानी बरतने की सलाह दी। ■

1. हनुमान जी ने किस पर्वत पर चढ़कर समुद्र लांघने हेतु छलांग लगाई थी ?
a) रैवताक
b) महेन्द्र
c) कांचन
d) मलयगिरि

2. खर और दूषण कहां रहते थे?
a) दंडक वन में
b) लंका में
c) किष्किंधा पर्वत पर
d) चित्रकूट में

3. सर्वप्रथम हनुमान जी की भेंट श्रीराम जी से किस स्थान पर हुई थी?
a) ऋष्यमूक पर्वत पर
b) पंपा सरोवर
c) दंडक वन में
d) पंचवटी में

4. इनमें से वानरराज कौन था?
a) सुग्रीव
b) हनुमान
c) नल
d) जटायु

5. रावण से युद्ध करते समय श्रीराम जी का सारथी कौन था ?
a) भरत
b) अंगद
c) मातलि
d) विभीषण

6. राजा दशरथ इनमें से किस वंश के थे ?
a) यदु वंश
b) कुरू वंश
c) पुरू वंश
d) रघु वंश

7. भगवान राम, लक्ष्मण और देवी सीता वनवास के दौरान किस वन में रुके थे?
a) अरन्या
b) अरण्यक
c) दंडकारण्य
d) करण्या

8. इनमें से कौन-से दो भाई गांधर्व विद्या अर्थात संगीत शास्त्र के भी तत्वज्ञ थे?
a) राम–लक्ष्मण
b) बालि–सुग्रीव
c) लव–कुश
d) नल–नील

9. रावण के वध के लिए श्रीराम को अपना दिव्य रथ किसने दिया था?
a) विभीषण
b) रावण
c) इंद्र
d) सुग्रीव

10. रामायण के जटायु को समर्पित विश्व की सबसे बड़ी पक्षी मूर्ती किस देश में है?
a) भारत
b) इंडोनेशिया
c) श्रीलंका
d) कम्बोडिया

उत्तर
1. (b), 2.(a), 3.(a), 4.(a), 5.(c), 6.(d), 7.(c), 8. (c) , 9. (c), 10. (a)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
01 अक्टूबर 1979	वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पुण्यतिथि
02 अक्टूबर 1904	गांधी एवं शास्त्री जयन्ती
03 अक्टूबर 1953	अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर पुण्यतिथि
04 अक्टूबर 1857	श्यामजी कृष्ण वर्मा जयन्ती
05 अक्टूबर 1524	रानी दुर्गावती जयन्ती
06 अक्टूबर 1963	बाबा खड़ग सिंह पुण्यतिथि
07 अक्टूबर 1907	दुर्गा भाभी जयन्ती
08 अक्टूबर 1936	मुंशी प्रेमचंद की पुण्यतिथि
09 अक्टूबर 1877	गोपबंधु दास जयन्ती
10 अक्टूबर	विमलेंदु चक्रवर्ती जयन्ती
11 अक्टूबर 1916	नानाजी देशमुख जयन्ती
12 अक्टूबर	काकोरी कांड के नायक भारतवीर मुकुंदी लाल गुप्ता पुण्यतिथि
13 अक्टूबर	विश्व दृष्टि दिवस
13 अक्टूबर 1877	भूलाभाई देसाई जयन्ती
14 अक्टूबर 1884	लाला हरदयाल जयन्ती
15 अक्टूबर 1931	भारत के 11वें राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम जयन्ती
16 अक्टूबर 1994	स्वतंत्रता सेनानी गणेश घोषपुण्यतिथि
17 अक्टूबर	स्वतंत्रता सेनानी सारंगधर दास जयन्ती
18 अक्टूबर 1909	लालमोहन घोष बलिदान दिवस
19 अक्टूबर 1870	मातंगिनी हाजरा जयन्ती
20 अक्टूबर 1967	विश्वनाथ वैशंपायन पुण्यतिथि
21 अक्टूबर 1951	भारतीय जनसंघ की स्थापना दिवस
22 अक्टूबर 1900	अशफाक उल्ला खां जयन्ती
23 अक्टूबर 1778	रानी चेन्नम्मा जयन्ती
24 अक्टूबर 1914	लक्ष्मी सहगल जयन्ती
25 अक्टूबर 1951	भारत में पहले आम चुनाव की शुरूआत दिवस
26 अक्टूबर 1890	गणेश शंकर विद्यार्थी जयन्ती
27 अक्टूबर 1670	बंदा बैरागी जयन्ती
28 अक्टूबर 1867	भगिनी निवेदिता जयन्ती
29 अक्टूबर 1739	जयकृष्ण राजगुरु जयन्ती
30 अक्टूबर 1883	स्वामी दयानंद सरस्वती पुण्यतिथि
31 अक्टूबर 1875	सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती

प्रेरणा विचार

प्रिय पाठकगण आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका द्वारा 25 अक्टूबर 2023 से 5 नवम्बर 2023 के बीच पाठकों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। जिसमें जुलाई 2023 से अक्टूबर 2023 (4 माह) की पत्रिकाओं में से प्रश्न पूछे जाएंगे। आपके पास जुलाई 2023 से प्रेरणा विचार पत्रिका का प्रत्येक अंक पहुंचेगा। जिसे आपको ध्यान से पढ़ना होगा तथा उन्हीं अंकों में से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर देना होगा। परीक्षा ऑनलाइन आयोजित की जाएगी।

ऑनलाइन परीक्षा दो वर्गों में आयोजित की जायेंगी।

- ♦ वर्ग 1- विद्यार्थी
- ♦ वर्ग-2- सामान्य

- ☞ सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पत्र (ई-प्रमाण पत्र) मिलेगा।
- ☞ दोनों वर्गों के प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह दिया जाएगा।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133754) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रेरणा विमर्श 2023

'स्व'- भारत का आत्मबोध

(1,2 एवं 3 दिसम्बर, 2023)

उद्घाटन

1 दिसम्बर
(शुक्रवार)
अपराह्न 3.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

उद्घाटन
एवं
प्रदर्शनी का अनावरण

विमर्श

2 एवं 3 दिसम्बर
(शनिवार/रविवार)
प्रातः 10.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

पत्रकार विमर्श/लेखक विमर्श
मीडिया शिक्षक/छात्र विमर्श
डिजिटल माध्यम विमर्श
प्रेरणा चित्रभारती लघु फिल्मोत्सव

समापन

3 दिसम्बर
(रविवार)
अपराह्न 3.30 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

समापन समारोह

आयोजक

प्रचार विभाग, मेरठ प्रांत/प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा
एवं
जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

कार्यक्रम स्थल
सभागार
गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

प्रेरणा विमर्श कार्यालय
प्रेरणा भवन, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
ई-मेल : prernavimarsh2023@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

संपर्क सूत्र: 9412245301, 9891120430 9650600195, 9811077950, 9354133754, 0120 4565851

Prerna Media | Prernasmedia | 9891360088 | @PrernaMedia

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

NIRALA WORLD RESIDENCY PRIVATE LIMITED

Corp. Office: H-61, 1st Floor, Sec-63, Noida (U.P.) 201301 | Site Office : GH-03A, Sector-2, Gr. Noida (West), U.P.
For Sales enquiries: 9212131476
Tel.: 0120-4823000, Email: sales@niralaworld.com, Web.: www.niralaworld.com